www.thearyasamaj.org

ओ३म्

परोपकारिणी

पाक्षिक
परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष ५८ अंक २२ मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र नवम्बर (द्वितीय) २०१६

।। ओ३म् ।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का १३३ वां बलिदान समारोह

भव्य ऋषि मेला

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आचार्य धर्मवीर

धर्म थे तुम, वीर थे तुम, आर्य थे तुम और ऋषिवर के अधूरे कार्य थे तुम।
तुम नहीं थे मात्र वक्ता या प्रवक्ता, तर्क–ऊहा के बड़े आचार्य थे तुम।
तथ्य के स्वीकार्य अनुमोदन! तुम्हें शत् शत् नमन् !!

www.thearyasamaj.org

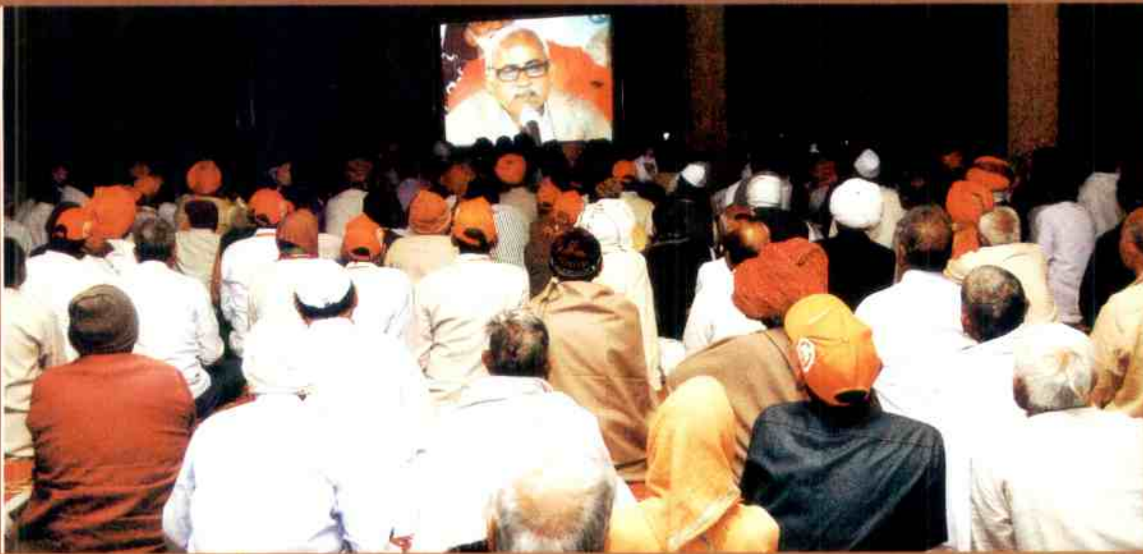

आचार्य धर्मवीर कृतज्ञता सम्मेलन की झलकियाँ

डॉ. बाबू महादप्पा मेहेत्रे

प्रो. शत्रुञ्जय रावत

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : २२

दयानन्दाब्द: १९२

विक्रम संवत्: कार्तिक शुक्ल, २०७३

कलि संवत्: ५११७

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.,
त्रिवार्षिक-५८० रु.,
आजीवन-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।
एक प्रति का मूल्य - रु. १५/-

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डालर
द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डा.,
त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डा.,
आजीवन-(=१५वर्ष)-५००पा./८०० डा.
एक प्रति का मूल्य - पाउण्ड-३
एक प्रति का मूल्य - डालर - ४

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

नवम्बर द्वितीय २०१६

अनुक्रम

०१. धर्म और दर्शन के क्षेत्र में ऋषि....	सम्पादकीय	०४
०२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
०३. महर्षि दयानन्द जी और राधास्वामी...	धर्मेन्द्र जिज्ञासु	१२
०४. सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार की भव्य योजना		१५
०५. हमारे बिछुड़े भाई	गंगाप्रसाद उपाध्याय	१६
०६. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२०
०७. खण्डन क्यों, खण्डन कैसे? ऋषि...	रामनिवास गुणग्राहक	२१
०८. आत्मा का स्थान-५	स्वामी आत्मानन्द	२५
०९. मनुर्भव	कन्हैयालाल आर्य	३०
१०. जिज्ञासा समाधान-१२१	आचार्य सोमदेव	३६
११. संस्था-समाचार		३८
१२. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

www.thearyasamaj.org

धर्म और दर्शन के क्षेत्र में ऋषि दयानन्द की देन

प्रस्तुत सम्पादकीय प्रो. धर्मवीर जी के द्वारा उनके निधन से पूर्व लिखा था। इसे यथावत् प्रकाशित किया जा रहा है।

-सम्पादक

हर आर्यसमाजी को एक चिन्ता सताती है कि आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार कैसे हो। अलग-अलग लोग अपनी-अपनी सम्मति देते हैं। सबसे पहले वे लोग हैं जो लोगों को आकर्षित करने के लिये लोकरञ्जक उपायों को अपनाने का सुझाव देते हैं। कोई सत्संग में भोजन का सुझाव देता है, तो कोई बच्चों में मिठाई बाँटने की बात करता है। खेल-मेले, आयोजन की बात करता है। स्वामी सत्यप्रकाश जी कहा करते थे कि आज आर्यसमाज का सारा कार्यक्रम तीन बातों तक सिमट गया है- जलसा, जूलूस और लंगर। भीड़ जुटाने के लिये हमारे पास विद्यालय के छात्रों के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं। बच्चों और विद्यालय के अध्यापकों की संख्या जोड़कर आर्यसमाज के कार्यक्रम सफल किये जाते हैं।

नगर के स्तर पर यदि दो-चार समाजें हैं तो उत्सव के समय आर्यसमाजों के लोग मिलकर एक-दूसरे के कार्यक्रम में सम्मिलित हो जाते हैं, तो संख्या सौ-पचास हो जाती है और हम उत्सव सफल मान लेते हैं, प्रान्तीय स्तर हो या राष्ट्रीय स्तर, सभी स्थानों पर वही मूर्तियाँ आपको दिखाई देती हैं। यदि इस संख्या को बढ़ाना हो तो हम अपने कार्यक्रम में किसी राजनेता को बुला लेते हैं।

ऐसे व्यक्ति के आने से उनके साथ आने वालों की संख्या से समारोह की भीड़ बढ़ जाती है। समाज का भी कोई कार्य हो जाता है तथा राजनेताओं को जन-सम्पर्क करने का अवसर मिल जाता है। हमारी इच्छा रहती है कि हम कोई ऐसा कार्य करें, जिससे हमारे कार्यक्रमों में लोगों की भागीदारी बढ़े। हम अपने कार्यक्रमों की तुलना समाज के पन्थों, महन्तों के कथा आयोजनों से करते हैं। आजकल ये कथाएँ भागवत, सत्यनारायण, सुन्दरकाण्ड, और भी बहुत सी पौराणिक कथायें चलती हैं, इनसे लोगों का मनोरञ्जन हो जाता है, कथावाचक को अच्छी दक्षिणा की प्राप्ति हो जाती है और आयोजक भी सोचता है कि वह पुण्य का भागी है। आर्यसमाज के पास ऐसी लोक लुभावन कथा तो है नहीं। आर्यसमाज वेद-कथा करता है, इस कथा को करने वाले ही नहीं मिलते तो सुनने वाले कहाँ से मिलेंगे।

हमें समझना चाहिए कि हमारे पास ऐसा कोई उपाय नहीं, जिससे भीड़ को आकर्षित किया जा सके। भीड़ आकर्षित करने का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रकार है- चमत्कार दिखाकर जनसामान्य को मूर्ख बनाना। साईं बाबा, सत्य सांई, आसाराम, निर्मल दरबार, सच्चा सौदा व सैंकड़ों मत-मतान्तर हैं, जो चमत्कारों से जनता पर कृपा की वर्षा करते हैं, ऋषि दयानन्द ने किसी को कोई चमत्कार नहीं दिखाया।

न कोई झूंठा आश्वासन दिया। आज व्यक्ति ही नहीं बल्कि मत-सम्प्रदाय भी लोगों को चमत्कारों से ही मूर्ख बनाते हैं। ईसाई लोग चंगाई का पाखण्ड करते हैं, दूसरों के पाप ईसा के लिये दण्ड का कारण बताते हैं। ईसा पर विश्वास लाने पर सारे पाप क्षमा होने की बात करते हैं। मुसलमान खुदा और पैगम्बर पर ईमान लाने की बात करते हैं। खुदा पर ईमान लाने मात्र से ईमान लाने वाले को जन्नत मिल जाती है। जिहाद करने, काफ़िर को मारने से और कुछ भी बिना किये खुदा जन्नत बख्श देता है। पौराणिक गंगा-स्नान कराके ही मुक्त कर देता है। व्रत-उपवास, कथाओं से ही दु:ख ढ़ल जाते हैं, स्वर्ग मिल जाता है। मन्दिर में देव-दर्शन से पाप कट जाते हैं।

www.thearyasamaj.org

सारे ही लोग जनता को मूर्ख बनाते हैं और भीड़ चमत्कारों के वशीभूत होकर ऐसे गुरु, महन्त, मठ, मन्दिरों पर धन की वर्षा करती है। क्या ऋषि दयानन्द ने कोई चमत्कार किया अथवा क्या आर्यसमाज के पास कोई चमत्कार है, जिसके भरोसे भीड़ को अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है?

इसके अतिरिक्त लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने का उपाय है-प्रलोभन। कोई व्यक्ति किसी के पास किसी के लाभ विचार से जाता है। कुछ लोग भोजन, वस्त्र, धन का प्रलोभन देते हैं। ईसाई लोग गरीबों में भोजन, वस्त्र बाँटकर लोगों को अपने पीछे जोड़ते हैं। कुछ लोग प्रतिष्ठा के लिये किसी गुरु, महन्त के चेले बन जाते हैं। किसी मठ-मन्दिर में नौकरी, सम्पत्ति का लोभ मनुष्य को उनके साथ जोड़ता है। मुसलमान और ईसाई लोगों को नौकरी और विवाह का प्रलोभन देते हैं। आर्यसमाज में प्रलोभन के अवसर बहुत थोड़े हैं, परन्तु उनका उपयोग नये लोगों को अपने साथ जोड़ने या पुराने लोगों से काम लेने के लिये नहीं किया जाता, आर्यसमाज की सम्पत्ति या उसकी संस्थाओं का उपयोग अधिकारी प्रबन्धक लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिये करते हैं। इसी कारण इन संस्थाओं में कार्य करने वाला व्यक्ति आर्य-सिद्धान्तों से जुड़ना तो दूर जानने की इच्छा भी नहीं करता।

आर्यसमाज में आने का एक लोभ रहता है-सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना। समाज की प्रजातान्त्रिक चुनाव-पद्धति के कारण किसी का भी इस संस्था में प्रवेश सरल है, दूसरे लोग संस्थाओं में घुसकर सम्पत्ति व पदों पर अधिकार कर लेते हैं, इनका विचार या सिद्धान्त से विशेष सम्बन्ध नहीं होता। संगठन के पास ऐसे अवसर इतने अधिक भी नहीं हैं कि इनसे अन्य मत-मतान्तर के लोगों में इसके प्रति कोई आकर्षण उत्पन्न हो सके। ऋषि दयानन्द के पीछे आने वाले लोगों में पहले भी कोई प्रलोभन नहीं था। आज तो संस्था के पास सम्पत्ति, भूमि, भवन, विद्यालय, दुकानें आदि बहुत कुछ हैं, परन्तु आर्यसमाज के प्रारम्भिक दिनों में आर्यसमाज में आने वालों ने अपना समय, धन, प्रतिष्ठा, प्राण सभी कुछ समाज और ऋषि की भावना के लिये अर्पित किया। फिर कौन सा कारण है, जिससे हमें लगता है कि लोग ऋषि के पीछे आते थे और आज हमारे पीछे क्यों नहीं आते?

लोग चमत्कारों के पीछे जाते हैं। हमारे पास चमत्कार नहीं है, ऋषि के पास भी नहीं थे। हमारे पास भी किसी को लाभ पहुँचाने के लिये कोई साधन नहीं है। फिर कौन सी बात है, जिसके कारण लोग ऋषि के अनुयायी बने, उनके पीछे चले और फिर आज हमारे में कौन सी कमी आ गई है, जिसके कारण लोग हमारी ओर आकर्षित नहीं हो रहे हैं? वह इन सब बातों का एक उत्तर है-ऋषि दयानन्द ने जो कुछ कहा था, वह बुद्धि को स्वीकार करने योग्य और तर्क-संगत था। जो कहा, यथार्थ था, सत्य था, तर्क और प्रमाण से युक्त था। लोगों को स्वीकार करने में संकोच नहीं होता था। जो भी उनकी बात सुनता था, उसकी समझ में आ जाती थी और वह उनका अनुयायी हो जाता था।

ऋषि दयानन्द ने दुकानदारी का सबसे बड़ा आधार कि भगवान् पाप क्षमा करता है, इसे ही समाप्त कर दिया। ईश्वर ने संसार बनाया और जीवों के उपकार के लिये बनाया। प्रत्येक प्राणी के जीवन के लिये जो जितना आवश्यक है, उसे देता है, परन्तु जिसका जितना व जैसा कर्म है, उसको उतना और वैसा ही फल देता है। वह अपनी इच्छा से कम या अधिक नहीं कर सकता। इसका कारण बताया कि वह न्यायकारी है। यदि किसी को कुछ भी दे सकता तो सबको सब कुछ बिना किये ही दे देता। सबको सब कुछ बिना किये ही मिलता तो किसी को कुछ भी करने की आवश्यकता ही नहीं थी। कर्म करने की आवश्यकता नहीं रही, तो संसार के बनाने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी।

ऋषि कहते हैं- ईश्वर से जीव भिन्न है, न वह उससे बना है और न कभी उसका उसमें लय होता है। न जीव कभी ईश्वर बनता है और न ईश्वर कभी जीव बनता है।

www.thearyasamaj.org

अवतारवाद पाखण्ड है। गंगा आदि में स्नान करने से मुक्ति मानना पाखण्ड है। देवता जड़ भी होते हैं, चेतन भी। परमेश्वर निराकार चेतन देवता है, शरीरधारी साकार चेतन तथा शेष जड़ देवता हैं। मूर्ति न परमेश्वर है, न मूर्ति-पूजा परमेश्वर की रजा है, यह तो व्यापार है, ठगी है। तीर्थ यात्रा से भ्रमण होता है, कोई पुण्य या स्वर्ग नहीं मिलता। जन्म से ऊँच-नीच, जाति-व्यवस्था मानना मनुष्य समाज का दोष है, इससे दुर्बलों को उनके अधिकार से वञ्चित किया जाता। विद्या-ज्ञान का अधिकार सब मनुष्यों को समान रूप से प्राप्त है। इस प्रकार सैकड़ों पाखण्ड इस समाज में व्याप्त थे, उन सबका ऋषि दयानन्द ने प्रबल खण्डन किया। यह अनुचित है तो फिर ईसाई हो या मुसलमान, जैन हो या बौद्ध, हिन्दू हो या पारसी, आस्तिक हो या नास्तिक, कुरान में हो या पुराण में, देशी हो या विदेशी, जहाँ पर जो भी गलत लगा, ऋषि ने उसका खण्डन किया। इस प्रकार उनके भाषण, उनकी पुस्तकें, जिसके पास भी पहुँची, उसे बुद्धिगम्य होने से स्वीकार्य लगीं। यही ऋषि दयानन्द के विचारों का तीव्रता से फैलने का कारण था।

आज हमारी समस्या यह है कि हम दूसरे के पाखण्ड का खण्डन करने में असमर्थ हैं और स्वयं पाखण्ड से दूसरों को प्रभावित करने का प्रयास कर रहे हैं। इस कारण इस कार्य में सफलता कैसे मिल सकती है। सफलता के लिये बुद्धिमान लोगों तक ऋषि के विचारों का पहुँचना आवश्यक है, जिसमें हम असफल रहे हैं। आज समाज में युवा-वर्ग अपनी भाषा से दूर हो गया है, उस तक उसकी भाषा में पहुँचना आवश्यक है। इसके लिये सभी भाषाओं में साहित्य और प्रचारक दोनों ही सुलभ नहीं हैं, परिणामस्वरूप नई पीढ़ी से हमारा सम्पर्क समाप्त प्राय है। समाज को यदि बढ़ना है तो बुद्धिजीवी व्यक्ति तक वैदिक विचारों को पहुँचाने की आवश्यकता है, इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं।

नान्यः पन्था विद्यतेऽभनाय।

- धर्मवीर

न्याय दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल' ऋषि उद्यान, अजमेर में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में **'महर्षि गौतम'** द्वारा प्रणीत **'न्याय दर्शन'** का **आचार्य श्री सत्यजित् जी** द्वारा १ मार्च २०१७ से विधिवत्, नियमित रूप से अध्यापन कराया जावेगा। यह दर्शन ९-१० महीनों में सम्पूर्ण हो जावेगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। समय-समय पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार यथायोग्य सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों की निवास व्यवस्था पृथक् रहेगी। पढ़ने के इच्छुक आर्यजन कृपया, सम्पर्क कर पूर्व स्वीकृति ले लेवें।

सम्पर्क-सूत्र - आचार्य सत्यजित् जी - ०९४१४००६९६१, समय रात्रि (८.४५ से ९.१५)

पता - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर - ३०५००१ (राज.) **ई-मेल** - styajita@yahoo.com

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

www.thearyasamaj.org

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

परोपकारिणी सभा की मन्नानूर यात्रा:- परोपकारी के पाठकों को कई बार यह बताया जा चुका है कि दक्षिण भारत के एक ही क्रान्तिकारी स्वाधीनता सेनानी को काले पानी में एकान्त निर्जन वन में बन्दी बनाकर रखा गया और वे थे दक्षिण के गेरीबाल्डी पं. नरेन्द्र जी। निजाम उस्मान ने जंगल में, जहाँ बाघ, बघेरे, सिंह और चीते विचरते थे, वहाँ एक पिंजरा बनवाकर भारत माता के इस लाल को बन्दी बनाकर रखा। कोई मनुष्य उनसे मिल नहीं सकता था। बात करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

मुझे ११ अगस्त को हैदराबाद जाने का एक अवसर मिला। मैंने पहले से ही वहाँ आर्यवीर रणवीर तथा श्री पं. प्रियदत्त जी को सूचना दी कि मेरी पहली प्राथमिकता मन्नानूर की तीर्थ यात्रा है। परोपकारिणी सभा की ओर से एक छोटी-सी सांकेतिक यात्रा निकालेंगे। व्यवस्था आपको करनी है। मैं थका टूटा था। हम तीनों तो थे ही, श्री भक्तराम जी (पं. गंगाराम जी के सुपुत्र) तथा उनका बेटा व कुछ और आर्य भाई अगले ही दिन १२ अगस्त को उस दिलजले, रणबांकुरे पं. नरेन्द्र जी की उस साधना स्थली पहुँच गये। श्रीमान् विट्ठलराव जी ने हमारे इस कार्यक्रम पर प्रसन्नता प्रकट की। जिस-जिस ने भी सुना, उन्हें इस सांकेतिक यात्रा से बहुत प्रेरणा मिली।

अब वहाँ वह पिंजरा भी नहीं। किसी ने भी उस बन्दीघर की सुरक्षा की न सोची। हम यात्रियों के मनोभावों की पाठक कल्पना ही कर सकते हैं। प्रेस ने भी इस घटना का महत्त्व न जाना। प्रियदत्त जी ने वहाँ जोश से 'पिंजरे वाला शेर दहाड़ा' कविता तथा एक और गीत का पाठ किया। मेरा संक्षिप्त भाषण हुआ। आश्चर्य का विषय है कि पन्द्रह अगस्त को पूरे देश में, तेलंगाना, आन्ध्र में भी किसी ने मन्नानूर के बन्दी शेर को याद नहीं किया। आर्य सामाजिक पत्रों में स्वतन्त्रता संग्राम पर लम्बे-लम्बे लेख लिखने वाले किसी भी लेखक ने **दक्षिण के उस अकेले विलक्षण वनवासी बन्दी का नाम तक नहीं लिया।**

मैंने वहीं आर्यवीरों को बोल दिया कि अगले वर्ष हम अजमेर से मन्नानूर की एक विशेष यात्रा निकालेंगे। तिथि व कार्यक्रम मैंने सोच रखे हैं। परोपकारिणी सभा का यह कार्यक्रम स्मरणीय रहेगा। वहाँ स्तूप के चारों ओर गंदगी देखी। झाड़ू व खुरपे हमारे पास नहीं थे। अंग्रेजी, हिन्दी में एक प्रेरणाप्रद शिलालेख वहाँ होना आवश्यक है। तेलगू भाषा में तो एक शिलालेख है ही। सरकार की उपेक्षा से उस स्मारक का........। उस क्षेत्र में दूर-दूर तक लोगों को पं. नरेन्द्र जी के उस कालेपानी की जानकारी है। वहाँ राजमार्ग के चौक में श्री डॉ. भीमराव अम्बेडकर की एक शानदार प्रतिमा है।

मेरी नई पुस्तक:- मैंने परोपकारी में लिखा था कि शीघ्र 'वैदिक इस्लाम' या ऐसे किसी नाम से एक ठोस पुस्तक लिखूँगा। श्री पं. नरेन्द्र जी का लाहौर से हैदराबाद आने पर इसी विषय पर ऐतिहासिक व प्रभावशाली भाषण हुआ था। मैंने पण्डित जी की कुटी के सामने बरामदे में बैठकर इसका लेखन आरम्भ कर दिया। माननीय शत्रुञ्जय जी के निवास पर इसे लगभग पूरा कर दिया। मेरे कृपालु सुयोग्य आर्य भाई श्री कृष्णचन्द्र गर्ग पंचकूला ने कुरान की ढाई हजार आयतें जो काफिरों के सम्बन्ध में हैं, उनकी चर्चा करते हुए मेरे निश्चय को हानिकारक बताकर इस पुस्तक को न लिखने की प्रेरणा दी, मैं चलभाष पर क्या बताता? उन्हें भ्रम है कि कुरान की महिमा पर कुछ लिखने जा रहा हूँ। मेरा उनसे कतई मतभेद नहीं। मैं तो एक इस्लामी विद्वान् की पुस्तक के पठनीय प्रेरक प्रमाणों को देकर यह सिद्ध करने जा रहा हूँ कि प्रचलित इस्लाम तो जो है, उसे सब जानते हैं। इस्लाम की नई रंगत वैदिक है और इस कारण से जन-कल्याणकारी है।

मुसलमानों में पीर-पूजा, कब्र-पूजा, पाप क्षमा करवाने व मन्नतें माँगने जैसी बुराइयाँ कम नहीं। कोई दूसरा इनका खण्डन करे तो मुसलमान सहन नहीं कर सकते। डॉ. जेलानी ने ऐसे सब अंधविश्वासों की धज्जियाँ उड़ाकर रख दी हैं। ये सब कुछ महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा के विद्वानों की लेखनी का चमत्कार है। श्री कृष्णचन्द्र जी गर्ग

www.thearyasamaj.org
ही कि पं. चमूपति जी की और मेरी पुस्तक '**कुरान वेद की छाओं में**' का तेलगू भाषा में अनुवाद छपकर आने वाला है। मैं इसकी स्वीकृति दे चुका हूँ। नई पुस्तक भी छपते ही अन्य-अन्य भाषाओं में आयेगी। **इसे मैंने श्री पं. नरेन्द्र जी को समर्पित किया है।**

भूल सुधार:- मैं कई बार लिख चुका हूँ कि आर्य-सामाजिक पुस्तकों में कई बार प्रूफ की अशुद्धियाँ बहुत अखरती हैं। आर्यसमाज में अच्छे प्रूफ रीडर नहीं मिलते। आचार्यों की तो बाढ़-सी आई हुई है। गुरुकुलों से निकले स्नातक यदि कम्प्यूटरकार व प्रूफरीडर का प्रशिक्षण लें तो उनको काम मिलेगा। समाज का भी हित होगा। 'सम्पूर्ण जीवन-चरित्र महर्षि दयानन्द' के दूसरे भाग के पृष्ठ १३९ में एक मुस्लिम नेता व विद्वान् की दो भागों में छपी एक पुस्तक का मैंने उल्लेख किया है। इसमें 'पृथ्वी गोल है और गति करती है' आर्यों की इस मान्यता का खण्डन किया गया था। इसके लेखक थे ख्वाजा हसन निजामी। न जाने कैसे लेखक के रूप में मौलवी सना उल्ला का नाम छप गया है। प्रूफ पढ़ते हुए यह भूल पकड़ में न आई। इसका मुझे बड़ा दु:ख है।

ऋषि जीवन में घुसेड़े गये दोष दूर हों:- ऋषि जीवन लिखने वालों के प्रमाद व कुछ के स्वार्थ से ऋषि पर लिखी गई पुस्तकों में कई ऐसे दोष घुस गये हैं, जिनको हर कोई दोष ही मानेगा। दुर्भाग्य से पं. लेखराम रचित ऋषि जीवन के हिन्दी अनुवादक को फारसी भाषा का ज्ञान न होने से अनुवाद में ऐसी-ऐसी भूलें हो गई हैं, जो बहुत चुभती हैं। अनुवादक के पश्चात् सम्पादक की और कृपा हो गई। स्वामी ओमानन्द जी ने, मैंने और अशोक जी ने इसके प्रसार में बड़ा उद्यम किया। मैंने इसे कभी ध्यान से पढ़ा ही नहीं था। मेरे पास मूल-ग्रन्थ था। जब सम्पूर्ण जीवन-चरित्र पर कार्य कर रहा था तो ये दोष सामने आये, फिर ऋषि के पत्र-व्यवहार के नये संस्करण को देखते समय और पक्का प्रमाण मिल गया कि कवि जी को फारसी भाषा का ज्ञान नहीं था। उन्होंने किसी का सहयोग माँगा ही नहीं। नया बाँस समाज के पूर्व प्रधान श्री ओमप्रकाश जी बहुत योग्य आर्य-पुरुष थे। श्री ओमप्रकाश जी कपड़े वालों से अनुवादक जी सहायता लेते तो भयंकर भूलें न होतीं। यथा अमृतसर में ईसाई-मत के मान्य विद्वान् पूर्व मौलवी इमादुद्दीन का नाम न जाने इमामुदीन किसने बना दिया। कुछ एक ने तो देवेन्द्र बाबू जी को बहुत प्रामाणिक समझकर पं. लेखराम जी के शुद्ध लेखन पर अपनी रिसर्च की छुरी चला दी। इन्हें क्या पता कि पं. लेखराम तो पादरी जी को व्यक्तिगत रूप से बहुत भली प्रकार से जानते थे। **'सब्त' शब्द का सबूत अनुवाद कर दिया गया।** यह अरबी शब्द है। इसका अर्थ ठप्पा मारना या Stamp लगाना व लिखना होता है।

अच्छा हो यदि दो चार सुयोग्य युवक सम्पूर्ण जीवन चरित्र से उक्त अनुवाद का मिलान कर ऐसी भूलों की एक सूची बनायें। मैं सहयोग करूँगा, फिर कोई सभा, संस्था पण्डित जी के ग्रन्थ का एक नया संस्करण निकाले। मेरे विचार में श्री धर्मेन्द्र जी जिज्ञासु ही वर्तमान में इस कठिन कार्य को कर सकते हैं।

महात्मा आनन्द स्वामी के विचार का तिरस्कार:- देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी को देशभक्ति के अपराध में अंग्रेजों ने जब काले पानी की कालकोठरी में यातनाओं के कोल्हू में पीड़ा दी तो डी.ए.वी. कॉलेज से उन्हें निष्कासित करके सरकार को प्रसन्न किया गया। यह सारी कहानी डी.ए.वी. द्वारा प्रकाशित भाई जी के दामाद द्वारा लिखित उनकी जीवन में दे रखी है। आर्यसमाज में किन्हीं तथा कथित इतिहास प्रेमियों ने यह इतिहास पचा लिया व उड़ा दिया।

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी ने भाई जी की कालेपानी से रिहाई पर भाई जी से अपनों द्वारा किये गये दुर्व्यवहार पर रक्तरोदन करते हुए लिखा था, ''जो अपराध उस अवसर पर आर्यसमाज से हुआ, जिसने **अपने सच्चे मिशनरी और देवता के लिए किसी दु:ख दर्द की अभिव्यक्ति न की। इसके विपरीत कायरता की अंधेरी गुफा में सो गया।**''

आर्यसमाजी प्रकाशकों, लेखकों ने पिछले लम्बे समय में भाई जी पर लेखों व पुस्तकों में बहुत कुछ लिखा है, परन्तु सरकारी कोप से डरकर, अपने लाभ के लिए डी.ए.वी. वालों ने भाई जी के साथ जो द्रोह व अन्याय किया, उस

www.thearyasamaj.org
[illegible]। केवल भाई जी पर लिखी गई मेरी पुस्तक ही इसका एक अपवाद है। मैंने भाई जी के अपने मनोभाव उसमें उद्धृत किये हैं। इतिहास में हटावट भी तो इतिहास प्रदूषण है। महात्मा आनन्द स्वामी जी के ऐतिहासिक शब्दों को हड़प जाने वाले लेखक क्या पाप के भागी नहीं हैं? न जाने इतिहास प्रदूषण अभियान चलाने वालों ने कहाँ-कहाँ हेरफेर और हटावट की है। गुरुकुल पक्ष तो पीड़ित आर्यों के सदा साथ खड़ा रहा, परन्तु उनका सीधा सम्बन्ध तो था नहीं। भाई जी की **मुक्ति के पश्चात् गुरुकुल काँगड़ी के उत्सव पर अन्तिम भाषण भाई जी का ही रखा गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी व भाई जी के व्याख्यानों का अपना ही महत्त्व था।**

मेरी हैदराबाद यात्राः- मुझे एक सप्ताह के लिए हैदराबाद जाने का अवसर मिला। परोपकारी में मैंने हैदराबाद से प्राप्त दो उत्साहवर्द्धक समाचारों पर टिप्पणी की थी। हमारे मान्य डॉ. विजयवीर जी को युद्धवीर जी की स्मृति में वेद, संस्कृत व हिन्दी की सेवा के लिये पुरस्कृत किया गया। आर्यवीर पुलकित को आई.आई.टी. द्वारा मेधावी वैज्ञानिक युवा का विशेष Award सन्मान देने की घोषणा की गई। पुलकित मेरा नाती है। मुझे बुलाया गया तो मैं प्रिय पुलकित के दीक्षान्त व सन्मान समारोह का साक्षी बनने पहुँचा। वह मेरा नाती है, यह भी मेरे लिये गौरव का विषय है। उसे माता-पिता व कुल से तो संस्कार मिले ही, उसके निर्माण का विशेष श्रेय उसके आई.आई.टी. के गुरुजनों को हम देते हैं, विशेष रूप से आदरणीय शत्रुञ्जय जी को।

हैदराबाद में आन्ध्रभूमि के सम्पादक श्रीमान् एम.वी.आर. शास्त्री जी का आकर्षण भी खींच ले गया। हृदय की सर्जरी के पश्चात् वह विश्राम कर रहे थे। विचार-विमर्श किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज पर उनके नये हिन्दी ग्रन्थ के अवलोकन व प्राक्कथन का कार्य सौंपा गया है, इसे शीघ्र पूरा करके भेज दूँगा।

गाड़ी में बैठते ही श्री धर्मवीर जी की शुभकामनायें मिलीं। देश के सब भागों से बधाई सन्देश मिले। मैं सबका हृदय से आभार मानता हूँ। हैदराबाद के क्रान्तिकारियों के परिवारों से भेंट हुई। कई महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपे गये। ईश्वर-कृपा बनी रहे, मैं यह कार्य करने में शीघ्र जुट जाऊँगा। निजाम पर बम फेंकने वाले आर्य क्रान्तिकारी श्री नारायण पवार का परिवार मेरे पास आयेगा। सोचा है कि यहाँ की बजाय उन्हें ऋषि उद्यान बुलाने से संगठन को बल मिलेगा। मुझे वीर नारायण पवार पर अपनी पुस्तक पूरी करनी है। मेरे भी उनसे सम्बन्ध थे।

हिन्दुओं के ये नेताः- हिन्दू नेताओं को हिन्दुओं की घटती संख्या की चिन्ता है, परन्तु हिन्दुओं के रोग-निवारण के लिये कुरीतियों के विरुद्ध मुँह ही नहीं खोलते। जातिवाद को मिटाने के लिये अन्तः प्रान्तीय व अन्तर्जातीय विवाहों के लिए आन्दोलन नहीं छेड़ते। आर्यसमाज में भी कई बड़बोले युवकों के विवाह के समय मैंने देखा है कि तब वह जात-बिरादरी की पूँछ को ही पकड़े रहते हैं। शुद्धि-आन्दोलन पर भाषण व लेख देकर एक रस्म पूरी करते हैं। महाराष्ट्र के आर्य अवश्य कुछ कर रहे हैं। नाम के साथ आर्य लगाने से कुछ न बनेगा, भीतर से यदि बिरादरीवाद की दुर्गंधि ही निकलती रही।

भारत में पहले बलात्कार (Rape) की घटनायें होती थीं, अब सामूहिक बलात्कार (Gang Rape) की आँधी चल पड़ी है। योग-दिवस व योग की चर्चा का परिणाम क्या निकला? योग में तो आत्मा में परमात्मा का साक्षात्कार करना होता है। देश भर में लाल डोरी कलाई पर बाँधकर, तिलक लगाकर, मूर्तिपूजा व तीर्थयात्रा करके हर कोई धार्मिक व प्रभु-भक्त बनने का कर्मकाण्ड पूरा कर रहा है। योग के आठ अंगों की बात तो दूर रही। देशवासी यम-नियमों को ही रौंद रहे हैं।

टी.वी. चैनलों में काले कुत्ते की सेवा करके भाग्य बदलने का व कष्ट-निवारण करवाने वाले बाबों व ज्योतिषियों की सुनिये और देशभर की दुर्घटनाओं पर विचारिये। श्री मुलायम सिंह जैसे अनुभवी राजनेता व श्री भागवत की कोटि के लीडर के सामूहिक बलात्कार पर दिये गये वक्तव्य पढ़कर हृदय रक्तरोदन करता है। जिस जोश व वीरता से आर्यसमाज के नेता बुराइयों से जूझते हुए प्राणोत्सर्ग करते रहे-हिन्दू समाज को उन प्राणवीरों का इतिहास दोहराना होगा।

 (परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १८ से २५ जून, २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

www.thearyasamaj.org

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द जी और राधास्वामी सम्प्रदाय

- धर्मेन्द्र जिज्ञासु

राधास्वामी सम्प्रदाय के कुछ बन्धुओं ने यह राग छेड़ा कि ऋषि दयानन्द जी ने हमारे मत के संस्थापक से आगरा में भेंट करके राधास्वामी मत का मन्त्र लिया या दीक्षा ली। इसका प्रमाण यह है कि महर्षि ने अपने ग्रन्थ में राधास्वामी मत का खण्डन नहीं किया।

आर्यसमाज के 'भीष्म पितामह' श्रद्धेय श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने 'परोपकारी' पत्रिका में राधास्वामियों के इस राग की खटिया खड़ी कर दी। अभी प्रकाशित अपने संस्मरणों के तीसरे भाग 'साहित्यिक जीवन की यात्रा' के पृष्ठ १७१ व १७२ पर इसके खंडन में ये प्रमाण दिए गए हैं-

१. तब यह मत नया था, अत: ऋषि ने समीक्षा करना आवश्यक न समझा।

२. जालन्धर में मौलवी अहमद हसन से चमत्कार विषय पर शास्त्रार्थ करते हुए श्री शिवदयाल का नामोल्लेख चमत्कार-खंडन में किया गया है।

('महर्षि दयानन्द सरस्वती-सम्पूर्ण जीवन-चरित्र' पं. लक्ष्मण जी आर्योपदेशक (राजेन्द्र जिज्ञासु)-पृष्ठ ८० पर)

३. राधास्वामी मत के गुरु हुजूर जी महाराज, गुरु साहिब जी महाराज तथा बाबा सावनसिंह जी की पुस्तक में ऋषि की चर्चा है, पर गुरु-मन्त्र लेने या दीक्षा का वर्णन कहीं भी नहीं है।

इस सफेद झूठ का मुँह काला करने हेतु कुछ और तथ्य इस लेख में प्रस्तुत हैं।

राधास्वामी सत्संग व्यास से सन् १९९७ में प्रकाशित 'सार वचन राधास्वामी (छन्द-बन्द)' के अनुसार-

संत हुजूर स्वामीजी महाराज सेठ शिवदयालसिंह जी का जन्म अगस्त सन् १८१८ ई. को आगरा में हुआ। आपके खानदान में सभी गुरु नानक साहिब की वाणी का पाठ किया करते थे। हुजूर स्वामी जी महाराज ने जितना अरसा सत्संग किया, गुरु ग्रन्थ साहिब और तुलसी साहिब की वाणी का पाठ करते रहे। (पृ. क)

जनवरी सन् १८६१ ई. को स्वामी जी महाराज ने अपने मकान पर सन्त मत का उपदेश शुरू किया, जो सत्रह वर्ष तक जारी रहा। जून सन् १८७८ ई. को इन्होंने अपना चोला छोड़ा।

राधास्वामी मत का दूसरा नाम 'संत-मत' है। राधा यानि आदि सुरत या आत्मा और स्वामी आदि शब्द, कुल का कर्त्ता है। (पृ. ङ)

परन्तु सिक्ख मिशनरी कॉलेज लुधियाना से प्रकाशित पुस्तक- 'देहधारी गुरुडम की शंकाओं के उत्तर' में इस दर्शन का खंडन करते हुए लिखा है:-

''राधास्वामी नाम कोई ईश्वरवादी नाम नहीं। न ही इसके अर्थ-सुरत-शब्द के हैं। यह शिवदयाल स्वामी की पत्नी 'राधा' के नाम से चला मत है, जिसके अर्थ और रूप को बाद में बदलने का व्यर्थ यत्न किया गया है।'' (राधास्वामी सत्संग व्यास से प्रकाशित पुस्तक- 'जिज्ञासुओं के लिए' पृ. २८)

यह बात 'सार-वचन राधास्वामी' पुस्तक के वर्णन के आधार पर सोलह आने सच साबित होती है। देखिए वचन ५:-

''फिर स्वामी जी महाराज ने राय साहिब सालगराम की तरफ फरमाया:- **कि जैसा मुझको समझते हो वैसा ही अब राधा जी को समझना और राधा जी और छोटी माता जी को बराबर जानना। (पृष्ठ ट) (इस पृष्ठ पर पाद टिप्पणी में लिखा है कि माता जी का असली नाम नारायण देवी था। महाराज जी के मँझले भाई की सुपत्नी को छोटी माता कहा है।)''**

वचन ६:- फिर राधा जी ने महाराज को हुकम दिया कि सिब्बो और बुक्की और बिशनों को पीठ न देना। (पाद टिप्पणी- ये तीनों हुजूर स्वामी जी महाराज की खास सेविकायें थीं।)

वचन १०:- गृहस्थी औरतें बाग में जाकर किसी साधु की पूजा और सेवा न करें। राधा जी के दर्शन और पूजा करें। (पृष्ठ ठ)

वचन १४:- फिर सेठ प्रतापसिंह को फरमाया- मेरा

www.thearyasamaj.org

[illegible] र राधास्वामी मत सालगराम का चलाया हुआ है। इसको भी चलने देना। (पृष्ठ ड)

वचन १८:- फिर राधा जी की तरफ फरमाया- मैंने स्वार्थ और परमार्थ दोनों में कदम रखा है, यानि दोनों बरते हैं, सो संसारी चाल भी सब करना और साधुओं को भी अपनी रीति करने देना। (पृष्ठ ढ)

ये सभी वचन दिनांक १५ जून सन् १८७८ अर्थात् शरीर छोड़ने वाले दिन के हैं।

यह उल्लेखनीय तथ्य है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी राधास्वामी महाराजों के श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अर्थ को सही नहीं मानती। इस कारण इनमें टकराव भी होता रहता है। हुजूर महाराज चरनसिंह जी के सन् १९६४ ई. में अमरीका यात्रा के समय के प्रश्नोत्तरों को 'सन्त-संवाद भाग-१' में संकलित किया गया है। पृष्ठ २४ पर हुजूर महाराज फरमाते हैं:-

''गुरुमत सिद्धान्त'' यह पुस्तक हुजूर महाराज सावनसिंह जी ने श्री आदि ग्रन्थ के आधार पर विशेष रूप से सिक्खों के लिए लिखी थी। जब पंजाब में राधास्वामी मत के उपदेश को समझाना शुरू किया गया, तब सिक्खों में खलबली मच गई। लोग समझने लगे कि महाराज जी श्री आदि ग्रन्थ का अर्थ सही नहीं बता रहे हैं।

सन् २०१२ ई. में अमृतसर के गाँव वरायच में गुरुद्वारे को नुकसान पहुँचाया गया, जिसकी वजह से राधास्वामियों और सिक्खों में काफी तनातनी रही। मामले ने इतना तूल पकड़ा कि राधास्वामी सत्संग व्यास के सचिव जे.सी. सेठी ने स्पष्टीकरण दिया-

"We would like to make it clear that Radha Swami Satsang Beas holds the revered 10 Sikh Gurus and the holy Shri Guru Granth Sahib Ji in the highest esteem."

'अर्थात् हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि राधास्वामी सत्संग ब्यास पूजनीय १० सिक्ख गुरुओं तथा पवित्र श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का सर्वोच्च सम्मान करता है।'

(हिन्दुस्तान टाइम्स (अंग्रेजी), जालन्धर, शुक्रवार, २० जुलाई २०१२ ई. पृष्ठ ३)

सत्यार्थ प्रकाश में राधास्वामी मत का खण्डन क्यों नहीं किया गया?

१. सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण (आदिम संस्करण) सन् १८७५ ई. में प्रकाशित हुआ। राधास्वामी मत का प्रचार सन् १८६१ ई. में आगरे में श्री शिवदयाल जी ने शुरू किया तथा सन् १८७८ ई. में उनकी मृत्यु हो गई। सत्यार्थ प्रकाश छपने तक राधास्वामी मत को चले मात्र १३-१४ वर्ष हुए थे, अत: इसका प्रभाव इतना नहीं था कि इसके बारे में अलग से कुछ लिखा जाता।

२. जैसा कि विगत पृष्ठों में राधास्वामी मत की पुस्तक 'सार-वचन' में वर्णन है कि श्री शिवदयाल जी के परिवार में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी व तुलसी साहिब का ही पाठ होता था। वो खुद भी इनका ही पाठ करते थे। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में श्री गुरु नानक देव जी आदि ६ गुरुओं तथा ३० अन्य साधुओं जैसे कबीर, दादू, तुलसी, मीरा आदि की वाणियाँ/शब्द हैं।

सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में कबीर-पन्थ समीक्षा, नानक-पन्थ समीक्षा, दादू-पन्थ समीक्षा के माध्यम से अपरोक्ष रूप से इस मत के सिद्धान्तों की भी समीक्षा समझी जा सकती है।

३. राधास्वामी मत में गुरु-मन्त्र लेने व गुरु-धारण करने का अत्यधिक महत्त्व है। सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास में गुरु-मन्त्र व्याख्या तथा एकादश समुल्लास में गुरु-माहात्म्य समीक्षा से इस मत के २ मुख्य स्तम्भ भरभरा कर गिर जाते हैं।

ऋषि दयानन्द जी के जीवन में अनेक ऐसे प्रसंग हैं, जो राधास्वामी मत के मुख्य आधारों- नाम-दान, गुरु-धारण, गुरु-मन्त्र इत्यादि का खण्डन ही करते हैं, जैसे-

१. ऋषि दयानन्द जी दण्डी विरजानन्द जी प्रज्ञाचक्षु को 'गुरु दक्षिणा' में अपना समस्त जीवन भारतवर्ष में आर्ष ग्रन्थों की महिमा व वैदिक-धर्म की स्थापना करने हेतु दान कर चुके थे। इसके बाद ही वे आगरा गए थे। किसी भी जीवन-चरित्र में उनका श्री शिवदयाल जी से मिलना नहीं लिखा। हाँ, पुष्कर निवास के समय एक शिवदयालु का नाम आता है, परन्तु वह ब्रह्मा-मन्दिर के

www.thearyasamaj.org

२. सन् १८७२ ई. में आरा में ऋषि दयानन्द जी ने एक व्याख्यान में कहा- "दीक्षा ग्रहण करने की रीति आधुनिक है, मन्त्र देने का अर्थ कान में फूँक मारने का नहीं।" (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र, देवेन्द्रनाथ मु. पृ. २११)

३. मुझे गुरु मत मानो- प्रयाग में सन् १८७४ ई. में कहा- "ऋषि-प्रणाली का अनुसरण करो, मुझे गुरु मानने से तुम्हारा क्या प्रयोजन है?" (त्रयोदश अध्याय पृ. २६५)

४. ठाकुर उमराव सिंह ने स्वामी जी से कहा कि मुझे शिष्य बना लीजिए तथा मन्त्र दे दीजिए। स्वामी जी ने कहा कि हम किसी को शिष्य नहीं बनाते और सारे मन्त्र तो वेद में हैं, हम क्या मन्त्र देंगे? (भरुच-सन् १८७४ ई., पञ्चदश अ., पृ. २९०)

५. चाँदपुर में स्वामी दयानन्द जी का उपदेश-

"संसार में अन्धकार फैल रहा है, अनेक प्रकार से जनता को धोखा दिया जा रहा है, लोग-महन्त बनकर मनुष्यों को ठगते और उनका धन हरण करते हैं, कोई कहता है- कान बन्द करके अनहद शब्द सुनो, उसमें सब प्रकार के बाजों के शब्द सुनाई देते हैं। कोई कहता है कि 'सोऽहम' आदि स्वर से जपो, फिर जब जीव मरेगा, उसी शब्द में समा जाएगा और उसका आवागमन न होगा।"

(मार्च १८७७ ई. सप्तदश अध्याय)

६. अमृतसर में मनसुखराम ने गुरुमन्त्र देने की प्रार्थना की तो स्वामी जी बोले कि गायत्री-मन्त्र ही गुरु-मन्त्र है। (सन् १८७७ ई., एकोनविंश अ., पृ. ३८४)

और अब चोट लुहार की-

अब राधास्वामी बन्धुओं की सेवा में दो सीधी-सादी घटनायें प्रस्तुत हैं:-

१. महर्षि दयानन्द जी सन् १८७८ ई. में मुलतान में थे। वहाँ एक व्याख्यान में आपने सन्त-मत की और दूसरे में सिक्ख-मत की आलोचना की थी।

(विंश अध्याय, पृ. ४१४)

सन्त-मत राधास्वामी मत का ही दूसरा नाम है, यह सप्रमाण पीछे बताया जा चुका है।

२. २६ दिसम्बर सन् १८८० ई. को आगरा नगर में आर्यसमाज स्थापित हो गया।

आगरा में राधास्वामी साधुओं का भ्रम भंजन-

राधास्वामी साधु, गुरु की सहायता और उपदेश के बिना कोई मनुष्य संसार-सागर से पार नहीं हो सकता।

स्वामी दयानन्द जी- गुरु की शिक्षा तो आवश्यक है, परन्तु जब तक शिष्य अपना आचरण ठीक न करे तब तक कुछ नहीं हो सकता।

राधा०- ईश्वर के दर्शन किस प्रकार हो सकते हैं?

स्वामी जी- इस प्रकार नहीं हो सकते जिस प्रकार तुम लोग अपनी मूर्खता से करना चाहते हो।

राधा०- ईश्वर तो भक्त के अधीन है।

स्वामी जी- ईश्वर किसी के अधीन नहीं। उसकी भक्ति तो अवश्य करनी चाहिए, परन्तु पहले यह तो समझ लो कि भक्ति है क्या वस्तु? जिस प्रकार से तुम लोग भक्ति करना चाहते हो, वह तो साम्प्रदायिक है, ऐसे-ऐसे तो बहुत से सम्प्रदाय लोगों को बिगाड़ने वाले हुए हैं, इनसे इस लोक वा परलोक का कोई लाभ नहीं है। बिना पुरुषार्थ किए कोई वस्तु अपने आप प्राप्त नहीं हो सकती।

राधा०- हम और हिन्दुओं से तो अच्छे हैं (मूर्त्ति-पूजा नहीं करते)

स्वामी जी- नहीं, हिन्दू तो राम-कृष्ण को ही ईश्वर का अवतार मानते हैं, तुम तो गुरु को परमेश्वर से भी बड़ा मानते हो।

राधा०- वेद के पढ़ने में बहुत समय नष्ट होता है, परन्तु उससे भक्ति की उपलब्धि नहीं होती।

स्वामी जी- जो कुछ भी पुरुषार्थ नहीं करते और भिक्षा माँगकर पेट पालना चाहते हैं, उसके लिए वेद पढ़ना कठिन है, फिर उसे भक्ति प्राप्त ही कैसे हो सकती है?

(आगरा सन् १८८० ई., षड्विंश अध्याय, पृ. ५४२ से ५४३) उपरोक्त घटनाओं के सन्दर्भ में राधास्वामी मत के खंडन करने की बात अन्य किसी प्रमाण की अपेक्षा नहीं रखती।

www.thearyasamaj.org

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है। प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। २. आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। ३. दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। ४. पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। ५. सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। ६. सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा**-१. सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। २. ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। ३. महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय हिन्दी में ६४ पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**
१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**09110400005753O**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

www.thearyasamaj.org

हमारे बिछुड़े भाई

- गंगाप्रसाद उपाध्याय

यह भली-भाँति सिद्ध हो चुका है कि पुराने जमाने में दुनियाँ भर में हिन्दू (आर्य्य) जाति रहती थी और वेद को मानती थी, परन्तु आज हिन्दुस्तान में भी एक तिहाई से अधिक लोग वैदिक-धर्म त्याग बैठे हैं, और चोटी जनेऊ रखने वाले तथा गौ की रक्षा करने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन कम हो रही है। इसके मुख्य कारण दो हैं:- पहला तो यह है कि हिन्दुओं ने अपने वैदिक धर्म का उपदेश दूसरों को करना छोड़ दिया। दूसरा जब कभी कोई जबरदस्ती मुसलमान या ईसाई बना लिया गया और उसने अपने धर्म में आने के लिये इच्छा प्रकट की तो उसी के भाइयों ने उसे यह कह कर दुत्कार दिया कि अब तुम सदा के लिये गिर गये, हिन्दू धर्म में वापिस नहीं आ सकते। जब दूसरे धर्म वालों को यह पता लगा कि हिन्दू धर्म ऐसा कच्चा धागा है कि फूंक मारते ही टूट जाता है तो उन्हें हिन्दुओं को अपने धर्म में मिलाने में बड़ी आसानी हो गई। अगर किसी भूले भटके को जबरदस्ती खाना खिला दिया या मुँह में थूक दिया तो उस बेचारे को मुसलमान बनना ही पड़ा। हिन्दुओं ने तो उसे अपने में से निकाल कर फेंक दिया। यदि किसी स्त्री का किसी ने सतीत्व भंग कर दिया तो उसके घर वालों ने उनको उनके बिगाड़ने वालों के सुपुर्द कर दिया। अब तो दूसरे धर्म वालों की चढ़ बनी। बिना परिश्रम के ही उनके धर्म वालों की संख्या बढ़ने और हिन्दुओं की संख्या घटने लगी। मुसलमानी राज्य के समय लाखों ऐसे हिन्दू थे जो बलात् मुसलमान बना लिए गये। इनको मुसलमानी धर्म तो पसन्द न था, परन्तु हिन्दू उनको अपने में रहने नहीं देते थे। इसलिये उन बेचारों में से बहुत से तो मुसलमान हो ही गये। परन्तु लाखों ऐसे राजपूत भी थे जिनको हिन्दुओं में वापिस आने की बड़ी लालसा थी। मुसलमानी धर्म तथा संस्कारों को ग्रहण करने में उनको ग्लानि होती थी। उनके बाप दादों ने गौ को माता कहकर पुकारा था। मुसलमानी धर्म में रहकर वह गाय की कुर्बानी नहीं कर सके। उनके बाप दादों ने चोटी रखी। इसलिये चोटी कटाने में उनका जी दुखता था। मुसलमानी धर्म में चचेरे भाई बहिन का विवाह धर्मानुसार समझा जाता था। हिन्दुओं में एक गोत्र में विवाह महापाप समझते थे। मुसलमानों में जिस लोटे में पाखाना जाते थे उसे बिना मिट्टी से साफ किये पानी पी सकते थे। हिन्दुओं को इन बातों से सैकड़ों पीढ़ियों से घृणा थी। ऐसी दशा में इन लोगों की बड़ी मुश्किल थी। एक ओर उनकी रुचि मुसलमानी धर्म में न थी। दूसरी ओर उनके हिन्दू रिश्तेदार उनको अपने में मिलाने के लिये राजी न थे। अब उन्होंने एक उपाय सोचा। वे मुसलमान तो न हुये परन्तु उन्होंने अपने को 'नौ मुस्लिम' (नये मुसलमान) या अधवरिया कहना शुरु किया। उन्होंने अपने रस्म रिवाज हिन्दुओं के से ही रखे। वे राम राम कहते, हिन्दुओं की तरह चौका लगाकर खाना खाते, विवाह शादी हिन्दुओं की भाँति करते, अपने नाम हिन्दुओं की तरह ''सिंह'' पर रखते, परन्तु विवाह में कभी-कभी मुसलमान मौलवी को भी बुला लेते थे। मौलवी को कभी-कभी बुला लेने से उस समय के राज कर्मचारी उनको मुसलमान समझकर अत्याचार न करते थे। दूसरी बात यह थी कि मुसलमान समझते थे कि अब ये हिन्दू धर्म में जा ही नहीं सकते। समय पाकर इनको मुसलमान ही होना पड़ेगा। इस प्रकार लाखों राजपूतों ने जिनको मलकाना कहा जाता है अपनी एक अलग जाति बनाकर कई सौ वर्ष इस मुश्किल के साथ गुजार दिये जैसे दाँतों के बीच में जीभ होती है। इधर इनको मुसलमानी धर्म से ग्लानि, उधर हिन्दुओं को उनसे घृणा। करते तो क्या करते। ऐसे नौ मुस्लिम आगरा, एटा, इटावा, मथुरा, फर्रुखाबाद गिरगाँव, दिल्ली, भरतपुर आदि प्रान्तों में लाखों हैं। कई हिसाब लगाने वालों ने तो इनकी संख्या २७ लाख तक लिखी है। आगरा जिले के सरकारी गजेटियर में लिखा है ''धर्म परिवर्तन किये हुये हिन्दुओं के अनेकों वंशज इस जिले में सर्वत्र पाये जाते हैं पर कारोली तालुके के छ: गाँवों में इनकी विशेष बस्ती हैं। इसके बाद मथुरा, एटा और मैनपुरी जिलों में भी इनकी खासी बस्ती हैं। ये मलकाना कहे जाते हैं। ये धर्म परिवर्तन किये हुये राजपूतों की श्रेणी में रखे जाते हैं? भिन्न-भिन्न स्थानों में वे अपनी भिन्न-भिन्न उत्पत्ति बतलाते हैं, पर इसमें सन्देह नहीं कि उनके पूर्व पुरुष उच्चवंश

www.thearyasamaj.org

सम्भूत राजपूत जमींदार या यद्यपि दुख के साथ वे अपने को मुसलमान कहते हैं, पर पूछने पर अपनी पहली जाति ही बतलाते हैं और मलकाना के नाम से पुकारा जाना नहीं चाहते। उनके नाम हिन्दुओं के से होते हैं। वे हिन्दू मन्दिरों में पूजा करते हैं और उनके आपस के शिष्टाचार का शब्द ''राम-राम'' है। वे शिखा रखते हैं और अपनी ही जाति में ब्याह करते हैं और मियाँ ठाकुर कहलाना चाहते हैं।'' इससे सिद्ध है कि मलकाने राजपूत हिन्दू ही हैं। बहुत से मुसलमान लोग इनको पक्का मुसलमान बनाने के लिये इनमें पहुँचे और तहकीकात करके जो रिपोर्ट मुसलमानी अखबारों में दी उनसे भी यही सिद्ध होता है।

कु. मुहम्मद अशरफ साहब, बी.ए. (अलीगढ़) सहयोगी जमींदार लिखते हैं ''मुस्लिम राजपूतों की बसावट जिला आगरा और मथुरा के निकट पाँच छः लाख के लगभग है.....साधारणतया नाम 'सिंह' और 'नारायण' पर होते हैं। रीति रिवाज में सब हिन्दू हैं इनमें कोई मुसलमानीपन नहीं। गौरी, खिलजी या औरङ्गजेब के समय में इनके पूर्वज मुसलमान हुए थे......ये ग्राम २५ के लगभग हैं।''

मुस्तफा रजा कादर सदर बफर इस्लाम बरेली आगरा से 'वकील' 'अखबार' अमृतसर को लिखते हैं-उनके नाम हिन्दुओं के से हैं, सिर पर चोटी रखते हैं। न अपना बर्तन किसी को देते हैं, न दूसरों का स्वयम् व्यवहार करते हैं।

ऐसे लोगों की उनके हिन्दू भाइयों ने बहुत दिनों तक परवाह न की और हिन्दुओं की दिन-प्रतिदिन कमी ही होती रही। परन्तु जब आर्यसमाज ने और विशेषकर आर्यसमाज के उपदेशक शिरोमणि श्री धर्मवीर, पं. लेखराम ने अन्य धर्मावलम्बियों की शुद्धि करके वैदिक-धर्म में मिलाना आरम्भ किया और सैकडों चोटी-विहीन शिरों पर चोटी रखाकर वैदिक-धर्म का अमृतपान उनको कराया, उस समय से मलकाना राजपूत भी फिर अपनी पुरानी बिरादरी में लौटने के स्वप्न देखने लगे और उनकी लालसा दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही गई। वह केवल यह चाहते थे कि उनके पुराने रिश्तेदार राजपूत उनको अपने में मिला लें। यह मामला बहुत दिनों तक क्षत्रियों के सम्मुख उपस्थित रहा, परन्तु ३० अगस्त १९२२ ई. को क्षत्रिय उपकारिणी महासभा की प्रतिनिधि सभा की बैठक बनारस में हुई। अध्यक्ष का आसन माननीय राजा सर रामपाल सिंह साहब के.सी.आई., मेम्बर स्टेट कौंसिल ताल्लुकेदारान सभा अवध ने ग्रहण किया। उसमें इस आशय का प्रस्ताव किया गया कि जो राजपूत शाही समय में बलात् मुसलमान बनाये गये थे, परन्तु उनके वंशज अब फिर अपने धर्म और बिरादरी में वापिस आना चाहते हैं, उनको शुद्ध करके बिरादरी में मिला लिया जाये। फिर २९ दिसम्बर १९२२ को क्षत्रिय प्रतिनिधि सभा की बैठक आगरा में लेफ्टिनेण्ट राजा दुर्गानारायणसिंह जी तिरवा (फर्रुखाबाद) नरेश के सभापतित्व में हुई और उस समय क्षत्रिय जनता की सम्मति जानकर मलकाने राजपूतों को बिरादरी में मिला लेने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। इसके बाद क्षत्रिय महासभा का २६ वाँ वार्षिकोत्सव ३१ दिसम्बर को आगरा में श्रीमन् राजाधिराज सर नाहर सिंह जी के.सी.आई.ई. शाहपुराधीश की अध्यक्षता में हुआ। उसमें उपर्युक्त प्रस्ताव होने पर सर्व सम्मति से स्वीकृत किया गया। इसे स्वीकृति की ही देर थी। स्वीकृति पाते ही मलकान राजपूतों को शुद्ध करना प्रारम्भ हो गया।

इच्छा तो दोनों ओर थी ही, केवल संस्कार की कसर थी। सो शुद्धि-सभा ने पूरी कर दी। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली, महात्मा हंसराज जी लाहौर से तथा कई सनातनधर्मी जैनी तथा अन्य महाशयों ने मिलकर कार्य करना आरम्भ किया। हवन किये गये, जनेऊ दिये गये, और मलकाना राजपूतों को फिर अपनी बिरादरी में मिला लिया गया। समस्त हिन्दू जाति में इस शुद्धि से कितनी जागृति हुई है, उसके समाचार पत्रों में छपते ही रहते हैं। हम यहाँ केवल ''अभ्युदय'' से कुछ उद्धृत करते हैं:-

''अब आशा प्रबल होती है कि हिन्दू जाति फिर एक बार शक्तिशाली होगी। हिन्दू भाइयों ने हिन्दू-धर्म और हिन्दू-जाति की लाज रख ली। जो साढ़े चार लाख राजपूत किसी समय में दबाव से या अपनी कमजोरी से मुलसमान हो गये थे, उनको शुद्ध कर गर्भ में ले लेने का हिन्दू जाति जोरों से प्रयत्न कर रही है। वास्तव में जीती जागती जाति का यह एक ज्वलन्त प्रमाण है कि यह गैरों को अपना ले और अपना-सा बना ले। हिन्दू जाति का इतिहास यदि देखा जाये तो यह छिपा नहीं है कि कितने अवसरों पर इसने दूसरों को अपने गर्भ में ले लिया था। इसके विपरीत

www.thearyasamaj.org
इतिहास की यह भी घोषणा है कि जिस दिन से हिन्दू जाति ने अपनी संख्या में इस तरह की वृद्धि का खयाल छोड़ा, उसी दिन से उन्नति के मार्ग की ओर उसकी पीठ हो गई। आज हिन्दू जाति को फिर अभिमान करने का अवसर प्राप्त है, क्योंकि हमारा दृढ़ विश्वास है कि इन साढ़े चार लाख बिछुड़े हुये भाइयों के मिलने के साथ ही ऐसे ही अन्य भाइयों के भी मिलने से हमारा सौभाग्य-सूर्य शीघ्र ही गगन मंडल में चमकता हुआ दिखाई देगा। हम हिन्दू जाति को इस अवसर पर बधाई देते हैं।''

बहुत से लोग समझते हैं कि इसमें केवल आर्यसमाजी काम करता है, परन्तु यह कहना भूल और भ्रम है। शुद्धि की स्वीकृति सभी सभाओं में दी हुई है। कुछ सभाओं के नाम यहाँ दिये जाते हैं-सनातनधर्मी सर्वप्रधान संस्था भारत-धर्म महामण्डल ने मलकाना राजपूतों की शुद्धि को पास कर दिया है। जिस अधिवेशन में यह प्रस्ताव पास हुआ, उसके सभापति श्री दरभङ्गा नरेश स्वयं थे। कबीरमठ और शारदा पीठ के जगद्गुरु शङ्कराचार्य जी पहले ही शुद्धि की व्यवस्था दे चुके हैं। महाराष्ट्र परिषद्, साधुमहासभा, गुर्जर महासभा, जाट महासभा, राजपूत क्षत्रिय महासभा ने भी हर्षपूर्वक शुद्धि को अपनाने का निश्चय किया है। अमृतसर, लाहौर, लायलपुर आदि शहरों से सनातनी पण्डित लिखित व्यवस्था दे चुके हैं। सनातन धर्म की प्रसिद्ध वक्ता श्री पण्डित दीनदयालु शर्मा आगरा में पधारे और शुद्धि के कार्य को न केवल पसन्द किया, किन्तु उसमें भाग लेने का विचार-निश्चय किया था।

शुद्धि के कार्य में वह कौन-सा गुण है, जिसने आज भारतवर्ष की हिन्दू जाति को आकर्षित कर रखा है? वस्तुत: अपने सजातीय लोगों को अपने में मिलाने से सभी जीती जागती जातियाँ खुश होती हैं। मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपने दूसरे भाई से मिलकर खुश हो। केवल कुत्ता ही ऐसा प्राणी है, जो दूसरे कुत्ते को देखकर भौंकता है। इसलिये यदि हिन्दू लोग अपने बिछुडे भाइयों को मिलाने से प्रसन्न होते हैं, तो उसमें आश्चर्य ही क्या? आश्चर्य इस बात का है कि हिन्दू जाति इतने दिनों तक क्यों सोती रही और अपने भाइयों के मिलाने में क्यों तत्पर न हुई, परन्तु आज हिन्दू जाति के बच्चे-बच्चे को शुद्धि के गुण मालूम हो गये हैं। सब को भली प्रकार यह मालूम हो गया है कि यदि हम शुद्धि में भाग न लेंगे तो एक दिन रही सही हिन्दू जाति सृष्टि से उड़ जायेगी। राम और कृष्ण के नाम भूमण्डल पर न रहेंगे। जनेऊ और चोटी का चिह्न संसार से मिट जायेगा। आर्य-सभ्यता का वृक्ष जड़ से काटकर फेंक दिया जायेगा। अब हिन्दू लोग सोते से जाग बैठे हैं। उनके हृदय में जाति उन्नति की लगन काम करने लगी है। शुद्धि का प्रश्न उनके जीने मरने का प्रश्न है। शुद्धि का काम छोड़ा और हिन्दू जाति की मृत्यु आई।

पर हमारे मुसलमान भाई रुष्ट हैं। तरह-तरह के इल्ज़ाम लगा रहे हैं और हमारे अदूरदर्शी हिन्दू भाई भी यह कहने लगे हैं कि शुद्धि बन्द हो, क्योंकि मुसलमान नाराज होंगे, परन्तु यह कितनी भूल है। मुलसमान सैकड़ों हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बनाते हैं, उस समय तो हिन्दू कुछ नहीं करते। यदि हिन्दू अपने बिछुड़े भाइयों को गले लगायें तो न्यायशील मुसलमानों को रुष्ट नहीं होना चाहिये। अपना धर्म पसन्द करने के लिए हर एक को स्वतन्त्रता है। और इस स्वतन्त्रता को छीनना पाप है। हम किसी की गर्दन पर तलवार रखकर यह नहीं कहते कि 'शुद्ध हो जाओ', परन्तु जो स्वयं शुद्ध होना चाहते हैं, उनको तो रोकना ही महापाप है। कुछ लोग कहते हैं कि मुसलमान लोग शुद्धि से चिढ़कर अधिक गो-हत्या करेंगे। मुसलमानों ने भी यही धमकी दी है, परन्तु हिन्दुओं को ६ मास की राह चलकर साल भर की राह न चलनी चाहिये। प्राचीन काल में जब मुसलमानों ने हिन्दुओं पर आक्रमण किया तो अपनी सेना के आगे गायें खड़ी कर देते थे। वह समझते थे कि हिन्दू तो गायों को बचाने के लिये हम पर हथियार न चलायेंगे और हम हिन्दुओं को मार लेंगे। यही हुआ और हिन्दू जब हार गये तो अन्य गायों को भी न बचा सके। यही चाल मुसलमान लोग अब चल रहे हैं। यह हमारे अनजान भाई इस धमकी में आ जाते हैं। वह यह नहीं सोचते कि ऐसी धमकियों में आकर कब तक दबते जायेंगे। हर बात पर मुसलमान ऐसी धमकी दिया करेंगे। यह गोरक्षा कितने दिन चलेगी। सबसे अच्छा उपाय गौरक्षा का यही है कि शुद्ध होने वालों को शुद्ध करके भविष्य में गौहत्या का बीज ही मिटा दो।

बहुत से कहते हैं कि शुद्धि नई बात है, परन्तु इतिहास देखने से पता चलता है कि जब हिन्दू प्रबल थे तो दूसरे देशवासियों को धर्म में मिला लेते थे। सिकन्दर के साथ

www.thearyasamaj.org

पहले से यूनानी भारतवर्ष में आये। हूण लोग भी बहुत से आये, परन्तु उनकी अलग जाति नहीं मिलती। वे सब हिन्दू ही हो गये। जब हिन्दू जाति गिरने लगी, उस समय इसने दूसरों को मिलाना छोड़ दिया। १९११ की 'मर्दुमशुमारी' की रिपोर्ट में लिखा है कि सौ वर्ष से कम दिन हुए कि बम्बई प्रान्त के उरप और वरप अग्री (Urap and Varap Agris) हिन्दू जो ईसाई हो गये थे, फिर हिन्दू हो गये और इसी जिले के कृपाल भन्डारी लोगों को पुर्तगालों ने बलात् ईसाई कर लिया था, परन्तु ये फिर हिन्दू हो गये। बड़ोदा के सुपरिंटेण्डेण्ट ने लिखा है कि तीन सौ वर्ष हुये कुछ लोग मुसलमान हो गये थे, परन्तु वे धीरे-धीरे रामानन्दी और स्वामीनारायण के मत में हो गये। इस प्रकार हिन्दुओं में प्रायश्चित् कराके शुद्ध करने का रिवाज नया नहीं है और इस समय तो हिन्दू जाति को बचाने का एक ही मात्र उपाय है-तन-मन-धन से शुद्धि के काम में भाग लिया जाये। प्रत्येक गौ-भक्त और शिखा-सूत्र धारी हिन्दू का कर्त्तव्य है कि जो जब कभी शुद्ध होना चाहे तो झट ही किसी शुद्धि सभा द्वारा उसको शुद्ध कर लेना चाहिये और जो कुछ धन या शक्ति उसके पास हो, उससे यथासमय शुद्धि की सहायता करनी चाहिये। यदि आपने अभी तक शुद्धि सभा की सहायता नहीं की, तो देर न लगाइये और तुरन्त ही अपना कर्त्तव्य पालन कीजिये। जो पैसा आप शुद्धि-सभा को देते हैं, उससे जन्म जन्मान्तर की गौ-सन्तान की रक्षा होती है। वे देश का उद्धार होता है और हिन्दू जाति की उन्नति होती है। सोचो और देर न करो। यह समय है, समय पर चूके और गये।

कुछ लोगों ने आजकल यह कहना आरम्भ किया है कि हम जानते हैं कि शुद्धि अच्छी चीज है। हम यह भी जानते हैं कि हिन्दुओं का अधिकार है कि उनके धर्म में मिलने वालों को मिला लिया जाये, परन्तु इस समय जब कि हिन्दू और मुसलमानों में मेल है, इसलिये शुद्धि को बन्द कर देना चाहिये, नहीं तो हमारे मुसलमान भाई हमसे रूठ जायेंगे। हमको ऐसा कहने वालों की बुद्धि पर हँसी आती है। यदि यह मानते हो कि हिन्दुओं को अपने धर्म में मिला लेने का उसी प्रकार अधिकार है जैसे मुसलमानों को, तो मेल के समय इस अधिकार को काम में लाने में क्या हानि! हमने मेल तो इसीलिये किया है कि हमारे अधिकार सुरक्षित रहें। यदि मेल के समय भी अधिकार पद-दलित किये गये तो ऐसे मेल से लड़ाई भली। मेल इसीलिये किया जाता है कि परस्पर एक दूसरे के अधिकारों की रक्षा हो। यदि हमने इस समय शुद्धि का कान छोड़ दिया तो कब करेंगे। क्या हिन्दुओं को शुद्धि का काम शुरु करने के लिये उस समय का इन्तजार करना चाहिये, जब हिन्दू मुसलमानों में लड़ाई का समय आ जाये। यदि हमारे मुसलमान भाइयों में न्याय है तो उनको बुरा नहीं मानना चाहिये, क्योंकि जिनकी शुद्धि की जा रही है वह हिन्दू ही हैं और अपने भाइयों में मिलना चाहते हैं।

कुछ मुसलमान भाई कहते हैं कि यदि किसी एक परिवार के चार आदमी शुद्धि के लिए तैयार हुए और एक न हुआ तो बेचारे पर बड़ा अन्याय होगा, परन्तु वह यह नहीं जानते कि आज तक लाखों और करोडों हिन्दुओं को मुसलमान कर लिया गया, उस समय यह दलील कहाँ गई थी। आज सैकड़ों लोग अपने माँ-बाप को छोड़कर ईसाई मुसलमान हो जाते हैं, फिर लोग इनको क्यों दोष नहीं देते। मुसलमान प्रचारकों को क्यों नहीं बन्द कर दिया जाता।

बात यह है कि इस समय हिन्दू जाति में जीवन के चिह्न पैदा हुये हैं। लोहा ठण्डा हो गया तो उसको पीटने से क्या बनेगा। अभी समय है। शीघ्रता कीजिये और शुद्धि-सभा में भाग लिजिये।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मुसलमान हमारे हिन्दू भाइयों को मुसलमान बनाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। इसन निजामी ने लिखा है कि जो मुसलमान दस हिन्दुओं को मुसलमान नहीं बनाता, वह सच्चा मुसलमान नहीं है। हमारे हिन्दू भाइयों को भी इससे उचित शिक्षा लेनी चाहिये और जहाँ कहीं कोई मुसलमान शुद्ध होना चाहे, उसको फौरन शुद्ध कर लेना चाहिये। साथ ही यह भी प्रयत्न करना चाहिये कि हमारे भाई मुसलमानों के फंदे में न पड़ जायें। जो हिन्दू मुसलमान हो रहा हो, उसे समझाना चाहिये।

नगर-नगर में हिन्दू सभाओं का खुल जाना आवश्यक है। बिना संगठन किये हममें शक्ति नहीं आ सकती। हिन्दुओं को चाहिये कि आपस में प्रीतिपूर्वक व्यवहार करें और अपने धर्म की रक्षा करें।

www.thearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित:

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षी: लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञास

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

www.thearyasamaj.org

खण्डन क्यों, खण्डन कैसे? ऋषि के शब्दों में

-राम निवास गुणग्राहक

किसी भी पदार्थ के सच्चे स्वरूप को जानने-समझने के लिए धरती तल के प्रत्येक बुद्धिमान् विवेकशील व्यक्ति व समाज की जो भी सर्वमान्य कसौटी होगी, उसमें खण्डन एक अनिवार्य घटक अवश्य होगा। खण्डन का सहारा लिये बिना संसार के इतिहास के किसी काल-खण्ड में कोई भी मान्य महानुभाव किसी भी सत्य को स्थापित करने में सफल हुआ होता, तो खण्डन की अनिवार्यता कभी की समाप्त हो चुकी होती। माना, अगर कोई व्यक्ति अज्ञानतावश, हठ वा दुराग्रह पूर्वक गाय को हाथी या घोड़ा कहने, मानने और मनवाने का प्रयास करने लगे तो गाय और घोड़े के अन्तर को, उनके सच्चे स्वरूप को जानने वाले बुद्धिमान् पुरुष गाय को गाय और घोड़े को घोड़ा सिद्ध करने के लिए खण्डन का सहारा लिये बिना काम चला लेंगे? यह कहना कि यह घोड़ा नहीं है, स्पष्ट खण्डन है और यह कहना कि यह गाय है, ये मण्डन है। किसी भूल, भ्रान्ति व हठवादिता को दूर करके सत्य की स्थापना का पहला कदम खण्डन के रूप में ही उठाना पड़ेगा। खण्डन से डरने, चिढने वा दूर भागने वाले व्यक्ति वा समाज सामाजिक अन्धविश्वासों व अन्धपरम्पराओं के सुरक्षित गढ़ बनकर रह जाते हैं। खण्डन से डरने व चिढ़ने वाले व्यक्ति बुद्धि व हृदय दोनों की दृष्टि से कमजोर (दुर्बल) होते हैं। ऐसे लोग अपने आस-पास के परिवेश में चली आ रही परम्पराओं व मान्यताओं से हटकर कुछ भी सोचने-विचारने व करने-कराने को तैयार ही नहीं होते। ये अपने पाखण्डपूर्ण परिवेश बदलने में तो संकोच नहीं करते, चाहे गायत्री परिवार वालों की गप्पबाजी हो या साईं का षड़यन्त्र, आसाराम की अमानवीय-अनैतिकताएँ हों या भविष्य में खड़े हो जाने वाले किसी नये कथित अवतारी के अवाञ्छित-असंगत उपदेश, खण्डन से डरने व चिढने वालों को ये सब तो सहज स्वीकार्य हैं, लेकिन सत्य-धर्म व ज्ञान की एक छोटी-सी किरण देखकर भी इनके हृदय में कौरवी-क्रोध की आग भड़क उठती है। रोगी बालक कड़वी दवा खाने या इंजैक्शन लगवाने से डरे वा बचना चाहे तो क्या उसके हितैषी परिजन या चिकित्सक अपना काम छोड़ देंगे? यदि नहीं, तो कुछ मत-वाले मतवादियों के चिढ़ने-क्रोध करने पर सत्य को निखारने में अत्यन्त उपयोगी घटक खण्डन की भी अनदेखी करना सम्भव नहीं।

महर्षि दयानन्द खण्डन की उपयोगिता बताते हुए लिखते हैं-'विद्वानों का यही काम है कि सत्य-असत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग करके परम आनन्दित होते हैं।' महर्षि की अटल मान्यता है-'सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।' इसलिए सत्य का सच्चा स्वरूप जनता के सामने रखना और उसका अधिकाधिक प्रचार करना वे मानव का सर्वोपरि कर्त्तव्य मानते थे। इसी कर्त्तव्य के पालनार्थ धार्मिक जगत् में व्याप्त अन्धविश्वासों को दूर करके सत्य-धर्म और ईश्वर के सच्चे स्वरूप को विश्वसनीय बनाकर प्रचारित करने के लिए ही ऋषिवर ने खण्डन का उपयोग किया था। वे लिखते हैं-'यह लेख (खण्डन) केवल सत्य की वृद्धि और असत्य के ह्रास होने के लिए है न कि किसी को दु:ख देने वा हानि करने अथवा मिथ्या दोष लगाने के अर्थ है।' वे आगे लिखते हैं-'सब मनुष्यों को उचित है कि सबके मत-विषयक पुस्तकों को देख-समझकर कुछ सम्मति वा असम्मति देवें, नहीं तो सुना करें।' खण्डन का उद्देश्य 'सत्य की वृद्धि और असत्य का ह्रास' ही होना चाहिए। किसी को दु:ख पहुँचाने, हानि करने या किसी पर झूँठे दोष लगाने के लिए नहीं। महर्षि तो सब मनुष्यों को प्रेरणा करते हैं कि उन सब मतों, जिन्हें आज भूलवश हम धर्म कहते हैं-की पुस्तकों को देखें, समझें और उन पर अपने विचार प्रकट करें। जो ऐसा न कर सकें, तो ऐसी चर्चा या विचारों को सुनें। निश्चित रूप से ऐसी घोषणा सत्य-धर्म व न्याय के ठोस धरातल पर खड़ा ऋषि दयानन्द ही कर सकता है। ऋषि दयानन्द खण्डन करने वालों के लिए भी एक उपयोगी शिक्षा देते हुए लिखते हैं-'प्रथम अपने दोष देख-निकालकर पश्चात्

www.thearyasamaj.org
दूसरों के दोषों में दृष्टि देकर निकाले।' अपने दोष निकाले बिना दूसरों के दोष दूर करने की योजना या अभिमान कभी किसी के सफल नहीं हो सकते। आज आर्यसमाज के विद्वानों, कर्णधारों को ऋषि के इन शब्दों पर सच्चे हृदय से विचार और व्यवहार करना चाहिए। मैं मेरे असत्य पर, दोषों पर पर्दा डालने का प्रयास करुँ, दूसरों के दोष-असत्य दूर करने में शक्ति लगाऊँ, यह खोखलापन खतरे से खाली नहीं है। हमें हृदय-पटल पर स्वर्ण-अक्षरों में ऋषि के शब्द अंकित करने होंगे-'सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो।' मुझे लगता है कि ऋषि के इन शब्दों पर लेखक के लिखने से कहीं अधिक पाठकों के विचारने व चिन्तन करने की आवश्यकता है। मैं तो महर्षि के 'खण्डन क्यों?' पर एक-दो वाक्य देकर आगे बढ़ना चाहता हूँ। खण्डन का औचित्य बताते हुए ऋषि लिखते हैं-'न कोई किसी पर झूँठ चला सके और न सत्य को रोक सके और सत्यासत्य विषय प्रकाशित किये पर भी जिसकी इच्छा हो वह न माने वा माने, किसी पर बलात्कार नहीं किया जाता।'

खण्डन कैसे?- महर्षि दयानन्द की विलक्षण विशेषता ये थी कि वे लेखन से लेकर परस्पर के शास्त्रार्थ, संवाद तक में हार-जीत जैसी मानव-सुलभ भावनाओं से नितान्त निर्लिप्त रहकर केवल सत्य-असत्य के निर्णयार्थ तथा सत्य की स्थापना के लिए ही प्रवृत्त होते थे। चाहे चाँदापुर मेले के अवसर पर उनके सामने मिलकर मुस्लिम-ईसाइयों को हराने का प्रस्ताव हो, या काशी-शास्त्रार्थ में विरोधियों द्वारा छल-प्रपञ्च हो-हल्ला पूर्वक उन्हें पराजित् घोषित करने के बाद भी अपनी स्वाभाविक शान्ति व सहृदयता को बनाये रखा। उनकी लेखनी वा वाणी से कभी हल्के या कठोर शब्दों का प्रयोग हुआ हो अथवा कभी किसी की व्यक्तिगत आलोचना या आस्था पर कटुप्रहार का कोई प्रसंग कहीं नहीं मिलता। सीधे शब्दों में कहें तो उन्होंने विशुद्ध रूप से असत्य का ही खण्डन किया और असत्य के खण्डन में वे कितने आक्रामक और असहनशील हो सकते हैं, इसके वे स्वयं ही अपने उदाहरण थे। उनके पास एक माँ का वात्सल्यपूर्ण हृदय था और पिता का विवेकपूर्ण मस्तिष्क। संसार के पूर्ण उपकार को जीवन का लक्ष्य बनाने और उसी के लिए प्रतिपल जीने वाले निर्लिप्त ऋषि के हृदय में किसी के प्रति राग-द्वेष की कल्पना नहीं की जा सकती। उनका स्वयं का जीवन पूर्णत: निर्दोष होने के साथ-साथ सत्य के प्रति पूर्ण समर्पित था। सद्भावों से समुज्ज्वल, सद्गुणों से समुन्नत, सदाचार से सुशोभित और सत्य के लिए समर्पित हुए बिना अगर कोई भी पुरुष खण्डन में प्रवृत्त होता है तो उसके सुपरिणामों की सम्भावनाओं में आशंकाओं का ग्रहण लग ही जाता है। सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन कोई मानवीय क्षमताओं से सम्पन्न होने वाला कार्य नहीं लगता, इसके लिए मन-मस्तिष्क में दैवीय तत्त्वों की प्रधानता होनी चाहिए। जिन महामानवों के मन-मस्तिष्क दैवीय गुणों को जितनी मात्रा में पा-पचा लेते हैं, वे सत्य के मण्डन व असत्य के खण्डन में उतने ही दूरगामी सुपरिणाम पैदा कर सकते हैं।

'खण्डन कैसे' को महर्षि के शब्दों में ही समझने का प्रयास करें तो उनके पूर्वोक्त वचनों में भी इसकी पर्याप्त झलक मिल जाती है। जैसे-'सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना।' खण्डन में 'सत्य का जय व असत्य का क्षय' ही मुख्य ध्येय होना चाहिए, न कि स्वमत का पक्ष-पोषण। दूसरी बात- यह कार्य मित्रतापूर्वक सर्वहित की दृष्टि से होना ही उत्तम है। ऋषि लिखते हैं-'यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या-द्वेष छोड़, सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है।' ईर्ष्या-द्वेष व जय-पराजय की भावना से ग्रस्त विद्वान् न तो सत्य-असत्य का निर्णय ही कर सकते हैं और न उनके अन्दर सत्य को ग्रहण करने व असत्य को त्यागने का सामर्थ्य आ पाता है। ईर्ष्या-द्वेष से ग्रस्त मत-वाले, पक्षपात आदि में प्रवृत्त-पुरुष खण्डन-मण्डन जैसे सत्य शोधक अनुष्ठान के लिए सर्वथा अयोग्य हैं, अपात्र हैं। महर्षि स्वयं इस दृष्टि से कितने उदारमना व गुणग्राहक थे, यह उन्हीं के शब्दों में समझिये-'जैसा मैं पुराण, जैनियों के ग्रन्थ, बाइबिल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर उनमें से गुणों का ग्रहण और दोषों

www.thearyasamaj.org

का त्याग तथा अन्य मनुष्य जाति की उन्नति के लिए प्रयत्न करता हूँ, वैसा सबको करना योग्य है।' महर्षि की सद्भावना और गुणग्राहकता देखिये कि वे जिन पुराण-कुरान आदि का खण्डन करने लगे हैं, उनको भी प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर उनसे भी गुणों का ग्रहण करते हैं। हमारे यहाँ प्रसिद्ध है-'**शत्रोरपि गुणा वाचा दोषा वाचा गुरोरपि**'- अर्थात् सद्गुण शत्रु में हों व दोष गुरु में भी हों तो उन्हें प्रकट करने में संकोच न करो। मेरे ऋषि की दृष्टि में तो कोई शत्रु था ही नहीं, उनका कोई शत्रु था तो असत्य था। जैसे ऋषि दयानन्द पुराण-कुरान आदि से भी गुण-ग्रहण की बात कहते हैं, वैसी भावना रखने वाला विद्वान् वैसी ही गुणग्राहक दृष्टि लेकर खण्डन-मण्डन में प्रवृत्त हो तो निश्चित रूप से सत्य का प्रचार-प्रसार असाध्य नहीं रहेगा।

महर्षि के कुछ मूल्यवान् वचन देकर लेख पूर्ण करेंगे। 'अपने वा पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें, हठियों का हठ-दुराग्रह न्यून करें करावें।'....'इस अनिश्चित क्षणभंगुर जीवन में पराई हानि करके लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्य को रखना मनुष्यपन से बहि: है।' 'सब मत मतान्तरों की गुप्त वा प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान्-अविद्वान् सब साधारण मनुष्यों के सामने रखा है, जिससे सबसे सबका विचार होकर परस्पर प्रेमी होके सब सत्य मतस्थ होवें।'

''जो-जो आर्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्म-युक्त चाल-चलन है, उसका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं, उनका त्याग नहीं करता, न कराना चाहता हूँ क्योंकि ऐसा करना मनुष्य-धर्म से बहि: है।'' विवेकी पाठक! इन ऋषि वचनों के मर्म-धर्म को आत्मसात करें-करावें, इसी भावना से यह लेख लिखा है। शुभमस्तु!!

यजुर्वेद परायण महायज्ञ

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द उद्यान, जमानी आश्रम, इटारसी में आचार्य सोमदेव की प्रेरणा से दिनांक २३ से २७ नवम्बर २०१६ तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। लोक कल्याणार्थ होने वाले इस महायज्ञ में २०० किलो (५ मन) घी की आहुतियाँ दी जायेंगी। यजमान पद को आचार्य सोमदेव-अजमेर सुशोभित करेंगे। जिज्ञासु महानुभावों की ज्ञान-पिपासा को शान्त करने के लिये स्वामी अमृतानन्द, आचार्य कर्मवीर, स्वामी ऋतस्पति, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी आदि भी उपस्थित रहेंगे। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

आयोजक-परोपकारिणी सभा, अजमेर, (महर्षि दयानन्द उद्यान जमानी आश्रम, इटारसी, म.प्र.)

व्यवस्थापक- आचार्य सत्यप्रिय आर्य

(७५०९७०६८२८)

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि हों तो कृपया सभा के पते पर भिजवा देवें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख विशेषांक में प्रकाशित किये जा सकें। ई-मेल-**psabhaa@gmail.com**

-मन्त्री, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर-३०५००१ (राज.)

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

www.thearyasamaj.org

आत्मा का स्थान-५

- स्वामी आत्मानन्द

गतांक से आगे.....

जो आत्मा अभी अन्नमय, प्राणमय, और मनोमय में फंसा हुआ है, उसको लक्ष्य का निर्देश इस आगे के प्रसङ्ग में किया गया है-

मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितोऽन्ने हृदयं सन्निधाय। तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीरा आनन्दरूपममृतं यद्विभाति। (मु. २/२/७)

शरीर का नेता अर्थात् प्राणमय और अन्नमय के प्रबन्ध में लगा हुआ आत्मा, अन्न में = अन्नमय कोष में अपने हृदय को स्थापित कर उस में प्रतिष्ठित है। जो आनन्द रूप अमृत ब्रह्मरन्ध्र में चमक रहा है और प्राप्तव्य है, उसे विद्वान् लोग विज्ञान से अर्थात् इन कोषों और आत्मा के विवेक से देख पाते हैं।

इस प्रसङ्ग में स्पष्ट ही सिद्ध होता है कि आत्मा नीचे के हृदय में प्रतिष्ठित है। क्योंकि उसे विवेक नहीं हुआ, और विवेक के बिना ऊपर के हृदय में उत्क्रमण हो नहीं सकता।

इस आगे के प्रसंग में महर्षि याज्ञवल्क्य ने भी अज्ञानी आत्मा की स्थिति नीचे के हृदय में ही मानी है।

य एष विज्ञानमयः पुरुषस्तदेषां प्राणानां विज्ञानेन विज्ञानमादाय य एषोऽन्तर्हृदय आकाशस्तस्मिन् शेते। तानि यदा गृह्णात्यथ हैतत्पुरुषः स्वपिति नाम। तद्गृहीत एव प्राणो भवति। गृहीता वाक् गृहीतं चक्षुः। गृहीतं श्रोत्रं गृहीतं मनः।। (बृहदारण्यक २/१/१७)

(जो यह विज्ञानमय आत्मा है वह अपने विज्ञान से इन प्राणों=इन्द्रियों के विज्ञान को समेट कर जो कि हृदय के अन्दर आकाश है उस में सोता है। उन इन्द्रियों को जब वह पकड़ लेता है=उन्हें कार्य से विरत कर देता है, तब यह पुरुष सोता है। उस समय नासिका, वाणी, चक्षु, श्रोत्र और मन सब काम करना बन्द कर देते हैं।)

इस प्रसङ्ग में भी आत्मा को इन्द्रियों से काम लेता हुआ और सोने के समय उन्हें समेट लेता हुआ प्रकट किया गया है। इन्द्रियों के बन्धन में=प्राणमय कोष में ही फंसा होने के कारण यह आत्मा भी अभी अज्ञानी है, उत्क्रमण का अधिकारी नहीं, अतः इस का भी निवास नीचे के हृदय में ही है।

और भी आगे चल कर कहा है

अथ यदा सुषुप्तो भवति यदा न कस्यचन वेद हिता नाम नाड्यो द्वासप्ततिः सहस्राणि हृदयात्पुरीततमभिप्रतिष्ठन्ते ताभिः प्रत्यवसृप्य पुरीतति शेते।

(बृहदारण्यक २/१/१९)

(अब जब मनुष्य सो जाता है, जब किसी को भी नहीं जानता, तब उसकी जो हिता नाम ७२००० बहत्तर हजार नाड़ियाँ हैं उनके द्वारा फैलकर पुरीतत नाड़ी में सोता है।)

हिता नामक हृदय की नाड़ियों के पास ही हृदयाकाश में पुरीतत नाड़ी होगी, जिसमें आत्मा सोता है। क्योंकि ऊपर के प्रसंग में महर्षि याज्ञवल्क्य ने ही जीव का शयन हृदय के आकाश में लिखा है।

यहाँ सारी प्रशाखाओं का सङ्कलन नहीं किया गया, इसीलिये संख्या बहत्तर हजार लिखी है।

यह आत्मा भी अभी आज्ञानी ही है, अतः इसका स्थान भी नीचे का हृदय ही है।

अन्यत्र महर्षि याज्ञवल्क्य लिखते हैं-

कतम आत्मेति योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः।।

(बृहदारण्यक ४/३/७)

(यह कौन सा आत्मा है, जो कि विज्ञानमय नामक है और हृदय के अन्दर प्राणों के मध्य में है, और जो अभी अन्तर्ज्योति है, जिसका प्रकाश अभी उस के अन्दर ही है, प्रकट नहीं हुआ)

इस प्रसङ्ग में महर्षि ने आत्मा का नाम विज्ञानमय कहा है। और उसे उस हृदय में उपस्थित किया है, जो प्राण केन्द्र के मध्य में शिर में है। क्योंकि वह मन पर अधिकार कर विज्ञानमय में प्रविष्ट हो चुका है। उसका विवेक ब्रह्मरन्ध्र में भगवान् की सहायता से करना चाहता है। और अपनी अन्तर्हित विज्ञान-ज्योति को प्रकट करना चाहता है।

www.thearyasamaj.org

प्राणों का केन्द्र मस्तिष्क में है, इसके सम्बन्ध में यजुर्वेद के एक मन्त्र के द्वारा महर्षि याज्ञवल्क्य क्या कहते हैं, इसे आगे पढ़िये-

''अर्वाग्बिलश्चमस ऊर्ध्वबुध्नस्तस्मिन् यशो निहितं विश्वरूपम् तस्याऽऽसत ऋषयः सप्त तीर वागष्टमी ब्रह्मणा संविदानेति। य एष ऊर्ध्वबुध्नः तच्छिरः। प्राणा वै यशो विश्वरूपम्। प्राणा वा ऋषयः। वाग्ध्यष्टमी ब्रह्मणा संवित्ते।'' (बृहदारण्यक २/२/३)

(एक कटोरा है, जिसका पेंदा ऊपर और छिद्र नीचे है। उसमें विश्वरूप यश रक्खा हुआ है। उसके किनारे पर सात ऋषि हैं, और आठवीं वाणी है, जो ब्रह्म के साथ संवाद करती है। इसके व्याख्यान में महर्षि लिखते हैं कि वह कटोरा हमारा शिर है और इसमें जो विश्वरूप यश है वह प्राण है। सात ऋषि भी प्राण ही है और आठवीं ब्रह्म से संवाद करने वाली अथवा उसका गुणगान करने वाली वाणी भी शिर के पास ही है।)

इस प्रसंग में महर्षि ने प्राणों का केन्द्र शिर माना है। यद्यपि प्राण, शरीर में भिन्न-भिन्न स्थानों में रहकर भिन्न-भिन्न कार्य कर रहे हैं, परन्तु उनका प्रधान केन्द्र शिर ही है।

अभ्यासी आत्मा को जहाँ ब्रह्म की प्राप्ति होती है, वह स्थान भी यह ब्रह्मरन्ध्र वाला हृदय ही है। इस विषय में आचार्य यम कहते हैं-

तन्दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम्। अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति।

(कठ.१/२/१२)

(वह दृष्टि से गम्य नहीं है। वह पुराण है और छिपा हुआ हृदय की गुहा में प्रविष्ट है। उस देव को अध्यात्म योग से मनन कर बुद्धिमान् पुरुष हर्ष शोक से छूट जाता है।)

ब्रह्म ऊपर की गुहा के अन्दर जिसे कि ब्रह्मरन्ध्र वाला हृदय कहते हैं, मिलता है। आत्मा को उसकी प्राप्ति के लिये उसका वहाँ ही जाकर मनन करना होता है।

ऊपर के हृदय में पहुँचने पर ही ब्रह्म प्राप्त होता है, इसका आचार्य और भी स्पष्टीकरण करते हैं-

ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके गुहां प्रविष्टौ परमे परार्धे, छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति पंचाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः।

(कठ. १/३/१)

(शरीर के उत्कृष्ट पर भाग में गुहा में प्रविष्ट दो आत्माओं को आहिताग्नि, पञ्चाग्नि विद्या में निपुण ब्रह्मज्ञानी लोग अपने सुकृत का फल प्राप्त करते हुए को छाया और धूप के समान देखते हैं।)

हमारे शरीर के उत्कृष्ट पर भाग में विद्यमान गुहा हमारा ब्रह्मरन्ध्र का हृदय ही है। ब्रह्मज्ञानी का अग्न्याधान अध्यात्म अग्नि में ही होता है। पञ्चकोष विवेक ही उनका पञ्चाग्नि विद्या में नैपुण्य है। इस हृदय में छाया स्थानीय जीव और आतप स्थानीय ब्रह्म है। जीव ज्ञानवान् है, परन्तु ब्रह्मज्ञान के सामने तो उस का ज्ञान छाया के समान ही है। वह यहाँ रहकर प्रभु के ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त कर रहा है, और यह ही उस के सुकृत का फल उसे प्राप्त हो रहा है, और यह ही उसे ज्ञान देना रूप प्रभु के सुकृत का फल है। प्रभु का अपना कुछ भी प्राप्तव्य नहीं है।

यह ही विषय संक्षेप में महर्षि तितिरि ने कहा है-

''यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्''

(जो उत्कृष्ट आकाश में गुहा में प्रविष्ट को जानता है)

हमारे शरीर में उत्कृष्ट आकाश,शरीर के द्युलोक नामक शिर में हृदयाकाश ही है। उसी में ब्रह्म को जाना जाता है। इसीलिये उसे यहाँ इस स्थान में निहित कहा गया है।

इसी विषय को महर्षि याज्ञवल्क्य ने छान्दोग्य में भी कहा है-

''अथ यदस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म, दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशः, तस्मिन् यदन्तस्तदन्वेष्टव्यम्, तद्वाव विजिज्ञासितव्यम्'' (छान्दोग्य ८/१/१)

(अब जो हमारे इस ब्रह्मपुर में कमल के समान दहर नामक स्थान है। इसके अन्दर का आकाश भी दहर है। उस के अन्दर जो है, उसे खोजना चाहिये और उसी के ज्ञान की इच्छा करनी चाहिये)

हमारे शरीर में ब्रह्मपुर हमारा द्युलोक नामक शिर है। उसमें कमल की आकृति वाला हमारा हृदय है। उसके अन्दर के आकाश को और उस हृदय को दोनों को ही यहाँ दहर कहा गया है। दहर शब्द का अक्षरार्थ होता है ''ददाति, हन्ति, रमयति च'' देता है, नष्ट करता है, और रमण कराता है। इन दोनों में ही ब्रह्म का निवास है। ब्रह्म-ज्ञान देता है,

www.thearyasamaj.org ...आनन्द में रमण कराता है। उसके सम्बन्ध के कारण, हृदय और हृदयाकाश को भी आत्मा के लिये ऐसे साधन उपस्थित करने वाला कह दिया गया है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने आत्मा और ब्रह्म दोनों को इस हृदय में दिखलाया है-

एष म आत्माऽन्तर्हृदयेऽणीयान् व्रीहेर्वा यवाद्वा
सर्षपाद्वा श्यामाकाद्वा, श्यामाकतण्डुलाद्वा।
एष म आत्माऽन्तर्हृदये ज्यान्पृथिव्या,
ज्यायानन्तरिक्षात् ज्यायान्दिवो, ज्यायानेभ्यो लोकेभ्यः

- छान्दोग्य ३/१४/३

(यह मेरा आत्मा अन्दर के हृदय में, धान से, जौं से, सामक से, और सामक के दाने से भी अत्यन्त छोटा है।)

यह मेरा आत्मा अन्दर के हृदय में, भूमि से, अन्तरिक्ष से, द्युलोक से और इन सारे लोकों से भी बहुत बड़ा है।।

यहाँ अन्दर का हृदय शिर वाला हृदय ही लिया गया है। इसमें प्राप्त करने वाले और प्राप्तव्य दोनों ही आत्माओं का एक का अणु और दूसरे का व्यापक स्वरूप दिखलाया गया है। इस प्रसंग में स्पष्ट किया गया है कि आत्मा को ब्रह्म प्राप्ति के लिये इस स्थान का आश्रय लेना पड़ता है।

इसी प्रकार के दृश्य का बृहदारणयक में एक स्थान पर भी वर्णन किया गया है-

''**मनोमयोऽयं पुरुषो भाः सत्यस्तस्मिन्नतर्हृदये यथा वीहिर्वा यवो वा** (दूसरे को लक्ष्य करके कहते हैं) **स एष सर्वस्येशानः सर्वस्याधिपतिः सर्वमिदं प्रशास्ति यदिदं किञ्च**''। (बृहदारण्यक ५.१)

यह मनोमय पुरुष अन्दर के हृदय में प्रकाश-रूप है, सत्-रूप है। और यह वह सबका ईश्वर, सब का स्वामी है। यह जो सब संसार है, सब पर यह शासन करता है।

यहाँ भी अन्दर का हृदय वही ब्रह्म-रन्ध्र वाला हृदय है। यहाँ भी इस हृदय में जीव ज्ञानरूप प्रकाश को प्राप्त कर रहा है और ब्रह्म उस ज्ञान की प्राप्ति में उसका स्वामी बना हुआ है। यहाँ जीव को धान अथवा जौ जितना परिमाण, उसके यहाँ के निवास स्थान के परिमाण के कारण कह दिया गया है। इसका वास्तविक परिमाण हम उपनिषद् के वाक्य से ही आगे चलकर व्यक्त करेंगे।

श्वेताश्वेतर में भी जीव और ब्रह्म इन दोनों के ज्ञान के लिये इसी हृदय में उल्लेख किया गया है-

न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्।
हृदा-हृदिस्थं मनसा य एनमेवं विदुरमृतास्ते भवन्ति।।

- श्वे.४,२०

(इसका रूप प्रत्यक्ष गोचर नहीं है। इसे चक्षु से कोई नहीं देखता। हृदय साधन से अर्थात् हृदय में रहकर हृदय में वर्तमान ब्रह्म को जानते हैं, वे अमर हो जाते हैं।)

इस प्रसंग में यह निर्देश किया गया है कि ब्रह्म ऊपर के हृदय में मिलेगा। साधक-आत्मा उस हृदय में पहुँचने की योग्यता प्राप्त करे और उसे जानकर मोक्ष का अधिकारी बने।

इसी विषय का स्पष्टीकरण अथर्ववेद के १०.२.३१, ३२वें में बड़ी उत्तम रीति से किया गया है-

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।
तस्मिन् हिरण्यये कोषे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते।
तस्मिन्यद्यक्षमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदो विदुः।।

(जिस के साथ कोई युद्ध नहीं कर सकता, ऐसी एक नौ द्वारों वाली और आठ चक्रों वाली देवताओं की नगरी है। उसमें एक सुवर्णमय कोष है, जिसे कि स्वर्ग कहते हैं और वह प्रकाश से घिरा हुआ है। हे देवो! उस तीन अरों वाले और तीन स्थानों पर प्रतिष्ठित सुवर्णमय कोष में जो आत्मा वाला पूजनीय देव है, उसे ब्रह्मज्ञानी जानते हैं।)

इन दो मन्त्रों में निम्न विषय प्रकट किये गये हैं-

१. हमारे इस शरीर में आठ चक्र और नौ द्वार हैं।

२. जब तक यह शरीर देवताओं की नगरी बना रहता है- अर्थात् इसके इन्द्रिय आदि देव असुर नहीं बन जाते, देव ही बने रहते हैं, तो इस नगर पर कोई रोग अथवा काम आदि शत्रु विजय नहीं पा सकते।

३. इस में एक स्वर्ग नामक प्रकाश से घिरा हुआ कोष है। जो कि सुवर्ण जैसे उपादान से बना है। चक्र का ही दूसरा नाम कोष है। प्रकाश वाला कोष हमारे शरीर में सहस्रार ही है, जो कि शिर में है। देवों का स्थान स्वर्ग भी हमारा शिर ही कहलाता है। प्रकाश वाला स्थान होने के कारण इसे ही द्युलोक भी कहते हैं।

४. इस कोष का निर्माण तीन अरों पर हुआ है। और इसीलिये यह अपने त्रिकोण आधार में तीन स्थानों पर

www.thearyasamaj.org

टिका हुआ है।

५. इसमें एक यक्ष है-पूजनीय देव है, जिसे कि ब्रह्म कहते हैं

६. उसकी शरण में आत्मा आनन्द तथा ज्ञान की प्राप्ति के लिये आया हुआ है, इसीलिये इसका दूसरा नाम आत्मन्वत्=आत्मा वाला हो गया है।

७. इस यज्ञ को ब्रह्म-ज्ञानी ही जान सकता है,दूसरा कोई नहीं। हम समझते हैं कि हमारे इस ऊपर के विश्लेषण से इन मन्त्रों का सब विषय पाठकों की समझ में आ गया होगा। इस अवस्था में आत्मा जिन उलझनों को पार करता हुआ पहुँचा है, वे कुछ कम महत्त्व की न थीं। इसे इन उलझनों से निकालकर इतने ऊँचे स्थान पर ले आना, अथवा वहाँ ही उलझाए रखना, ये दोनों ही यद्यपि मनोदेव के काम हैं, परन्तु यह सत्य है कि आत्मा की उपेक्षा अथवा सावधानता उसकी इन दोनों अवस्थाओं में मुख्य कारण है।

आत्मा का परिमाण-

एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यो यस्मिन् प्राणः पञ्चधा संविवेश।
प्राणैश्चितं सर्वमोतं प्रजानां यस्मिन् विशुद्धे विभवत्येष आत्मा।
- (मुण्डक ३/१/९)

यह अणु आत्मा मन से ही जानना चाहिए। पाँचों प्राणों का निवास इसी के पास है। प्राण एक व्यापक तत्त्व है, जिसका सारी प्रजाओं के चित्तों के साथ सम्बन्ध है। विशुद्ध हो जाने पर आत्मा का ज्ञान भगवान् के ज्ञान की सहायता से इतना विस्तृत हो जाता है कि उस का भी सम्बन्ध प्रजाओं के सब चित्तों के साथ हो जाता है। इस प्रसंग में स्पष्ट ही आत्मा का परिमाण अणु माना है।

यह प्रश्न हो सकता है कि दैव-मन का स्थान प्राणों तथा ज्ञानेन्द्रियों के केन्द्र में शिर में माना गया और यक्ष मन का कर्म इन्द्रियों के केन्द्र में छाती वाले हृदय में माना गया है। और यह भी मन्तव्य-कोटि में आ चुका है कि मन आत्मा की स्वीकृति के बिना कुछ नहीं कर सकता। उसका कोई ज्ञान तथा कर्म उसकी प्रेरणा के बिना सम्भव नहीं है। ऐसे स्थल मिलते हैं कि जहाँ मन कई काम कर लेता है और आत्मा को उनका पता भी नहीं लगता। परन्तु उन स्थलों में भी उसे आत्मा की आज्ञा हो चुकी होती है। ऐसे अभ्यास में आये हुए कर्मों के स्थल में एक बार आज्ञा प्राप्त हो जाती है और फिर वे उसी प्रकार के कर्म उसी आज्ञा के आधार पर अभ्यास के चक्र में होते रहते हैं।

जैसे कि हमने २५ कोस की यात्रा आरम्भ की है। अपने लक्ष्य पर पहुँचने के लिये २५ कोष चलकर जाने के विषय में पर्याप्त सोच विचार कर लिया है, आत्मा की मन को आज्ञा मिल चुकी है। मन भी पैरों को चलने की प्रेरणा कर चुका है और पैरों ने भी चलना आरम्भ कर दिया है। अब २५ कोस तक यह चलने का अभ्यास अपने आप चलता रहेगा। बार-बार मन को आत्मा से और पैरों को मन से आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं रहती। इसी प्रकार शौच, व्यायाम, स्नान, नित्य कर्म, भोजन, शयन आदि जो अभ्यास में आयें, वे नित्य के कर्म हैं। मन में भी बार-बार आज्ञा की आवश्यकता नहीं रहती, इसी प्रकार और भी अभ्यास में आये हुए कर्मों के विषय में जान लेना चाहिये।

परन्तु पहिले अथवा तत्काल मन को आत्मा की आज्ञा लेनी ही पड़ती है और उसे उसके नियन्त्रण में रहना ही पड़ता है और यदि बात ऐसी है तो जब आत्मा नीचे के हृदय में होगा, तब दैव-मन से और जब यह ऊपर के हृदय में रहेगा तब यक्ष-मन से काम कैसे लेगा?

इस प्रश्न का उत्तर सरल ही है। नीचे के हृदय से लेकर ऊपर के हृदय तक और फिर सारे ही शरीर में प्रेरणा-तन्तुओं, ज्ञान-तन्तुओं और हृदय की और अत्यन्त सूक्ष्म नाड़ियों का इतना विस्तृत जाल बिछा हुआ है, जिसे कि देखकर बुद्धि चकरा जाती है। बस उसी नाड़ी-जाल के द्वारा आत्मा कहीं भी बैठा हुआ किसी मन के ऊपर अपना नियन्त्रण का हाथ रख सकता है।

इस प्रकार उपनिषदों के समन्वय तथा वेद के भी कुछ सिद्धान्तों के आधार पर हमें अपने शरीर में दो हृदय मानने पड़ते हैं। उन में से एक छाती में और एक शिर में है। आत्मा भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में इन दोनों ही स्थानों में निवास करता है, संसार दशा में नीचे के हृदय में वह कहीं भी रहता हुआ प्राण तन्तुओं और ज्ञान तन्तुओं के द्वारा शरीर, साधन, शक्तियों पर अधिकार रख सकता है।

मैंने ये पंक्तियाँ केवल प्रसङ्ग को छेड़ने के लिये लिखी हैं। विद्वानों के विचार मिलने पर ऊहापोह का अवसर मिले, यह ही ध्येय है।

www.thearyasamaj.org

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-09110400005753 0 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

www.thearyasamaj.org

मनुर्भव

- कन्हैयालाल आर्य

जब एक बार कुछ लोगों ने प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन से संसार में व्याप्त दु:ख एवं अशान्ति को दूर करने का उपाय पूछा तो वैज्ञानिक ने उत्तर दिया- "श्रेष्ठ मनुष्यों का निर्माण करो"। आइन्स्टीन ने जो उत्तर दिया वही कार्य तो आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही वेदोक्त "**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**" का उच्च घोष करके कर रहा है, जिससे आज राष्ट्र ही नहीं, विश्व में भी मानव-निर्माण की लहर दिखाई दे रही है।

आर्यसमाज विश्व का हित चाहता है, इसलिए उसने 'मनुर्भव' का वैदिक सन्देश पूरे विश्व को दिया। आजकल पशुओं की भी नस्ल सुधारने की योजना बनाई जाती है, किन्तु मनुष्य समाज के सुधारने की योजनाओं का कहीं नाम तक भी नहीं सुनाई देता।

यूनान देश के एक दार्शनिक के बारे में प्रसिद्ध है कि एक दिन वह चमकते सूर्य के प्रकाश में लालटेन लिये घर से बाहर निकल पड़ा। उसे इस प्रकार दिन में जलती लालटेन हाथ में लिये देखकर लोगों ने पूछा-'क्या आप की कोई वस्तु खो गई है, आप इतने विद्वान् होकर भी सूर्य के प्रकाश में लालटेन लिये क्यों घूम रहे हो?' दार्शनिक ने गम्भीरता से उत्तर दिया- "मैं मानव को ढूँढ़ रहा हूँ।" इस पर लोगों ने पूछा- "क्या हम मानव नहीं हैं?" दार्शनिक ने उत्तर दिया- "नहीं, तुम मानव नहीं हो, तुममें से कोई व्यापारी है, कोई ग्राहक है, कोई मालिक है, कोई मजदूर है, कोई किसान है और कोई कर्मचारी। तुम में से मनुष्य कोई नहीं।"

विश्व में वेद ही ऐसा सर्वोत्तम शिक्षा-दायक धार्मिक ग्रन्थ है, जिसमें मानव जीवन को सार्थक एवं सफल बनाने के लिए उपदेश दिया गया है। वेद में उपदेश है- '**मनुर्भव**' अर्थात् मनुष्य बन-

"तन्तु तन्वरन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः
पथो रक्ष धिया कृतान्। अनुल्बणं वयत
जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।।"

(ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त ४३, मन्त्र ६) शब्दार्थ- रजसः (अपनी ज्योति में ज्ञान-प्रकाश के), तन्वन् (तनता हुआ तू), भानुम् (द्युलोक तक) अनु, इहि (अनुसरण करता जा, चला जा), (इस तरह), धिया कृतान् (कलाविदों या ज्ञानियों के बुद्धि कौशल से बनाये गये), ज्योतिष्मतः पथः (ज्ञान प्रकाशमय प्रणालियों की, मार्गों की), रक्ष (तू रक्षा कर), (इस ताने में) जोगुवाम (भक्तों के), अपः (व्यापक कर्मों को), अनुल्वणम् (उलझन रहित), वयत (विस्तृत कर, बुन), (इन उपायों से), मनु:भव (मनुष्य=मननशील बन), दैव्यम् जनम् (इस दैव्यजन रूपी वस्त्र को), जनय (उत्पन्न कर, बना) अर्थात् श्रेष्ठ, गुणवान् सन्तान को उत्पन्न कर।

आचार्य अभयदेव जी ने इस मन्त्र की बहुत सुन्दर व्याख्या इस प्रकार की है-

"हे जीव! तू हमेशा कुछ न कुछ बुनता रहता है, अपने भाग्य को, भविष्य को, अपने जीवन को बुनता रहता है। जीवन इसके अतिरिक्त और क्या है कि मनुष्य अपने ज्ञान (समझ) के अनुसार कुछ दूर तक देखता है और फिर उसके अनुसार कर्म करता है। इस तरह जीव अपने ज्ञान के ताने में कर्म का बाना डालता हुआ निरन्तर अपने जीवन-पट को बनाया करता है, किन्तु हे जीव (जुलाहे)! अब तू अपना यह मामूली रद्दी कपड़ा बुनना छोड़कर दिव्य जीवन का खद्दर बुन, "दैव्य जन" को उत्पन्न कर। इसके लिए तुझे बड़ी सुन्दर और लम्बी तानी करनी पड़ेगी। द्युलोक तक विस्तृत प्रकाशमान ताना तान। ऐसे दिव्य वस्त्र बनाने की लुप्त हुई कला की रक्षा इस प्रकार हो सकती है, अतः इस उद्योग में पड़कर तू उन ज्ञान-प्रकाश प्रणालियों की रक्षा कर, जिन्हें कि कलाविदों ने अपनी कुशल बुद्धि द्वारा बड़े यत्न से अविष्कृत किया था। ज्ञान के इस दिव्य ताने को तू फिर भक्ति के कर्म द्वारा बुन। इस ताने में भक्ति-रस से भिगोया हुआ अपने व्यापक कर्म का बाना डालता जा और ध्यान रख, तेरी बुनावट एकसार हो, कभी ऊँची-नीची या गठीली न हो। सावधान रहते हुए सदा उस ज्ञान के अनुसार ही तेरा ठीक-ठीक कर्म चले और वह कर्म सदा भक्ति से प्रेरित हो। इस सावधानी के लिए तुझे पूरा मननशील होना पड़ेगा, सतत विचार-तत्पर होना होगा, तभी यह दिव्य जीवन का सुन्दर पट तैयार हो सकेगा। अतः हे जीव! तू दिव्य जीवन बुनने

www.thearyasamaj.org

लिए, उठ और इस लुप्त हो रही अमूल्य दिव्य कला की रक्षा कर।''

लोक परलोक की सभी समस्याओं का समाधान वेदों में प्रस्तुत है। उन्हें पढ़िए, मनुष्य बनिये 'मनुर्भव'। यह वेद का, मानवता का अमर सन्देश सारे विश्व के लिए है। अरबों वर्षों तक सारे संसार में यह मानवता का शुभ सन्देश प्रचारित एवं प्रसारित किया जाता रहा। आर्यावर्त्त (भारत) के अनेक ऋषि-मुनियों ने इसे प्रचारित करने के लिए अपने जीवन को आहूत कर दिया।

परमपिता परमात्मा का आदेश है कि हे पुरुष! तू उठ, तुझे दिनों-दिन उन्नत होना है, तू इस सृष्टि में मुरझाया हुआ क्यों रहता है। वेद में कहा है-

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि।
आ हि रोहेमममृतं सुखं रथमथ जिर्विविर्दथमावदासि।।

(अथर्ववेद काण्ड ८, सूक्त १, मन्त्र ६)

हे पुरुष (इस देवपुरी में निवास करने वाले पुरुष) ते उद्यानम् (तेरी उन्नति ही हो), न अवयानम् (कभी तेरी अवनति न हो), ते (तेरे लिए), जीवातुम् दक्षतातिम् कृणोमि (जीवन-औषध, बल की वृद्धि करता हूँ), अर्थात् तेरे लिए नीरोगता तथा शक्ति प्राप्त कराता हूँ। तू अमृतम् (अमर, रोगरहित), सुखम् रथम् आरोह (उत्तम इन्द्रियों वाले रथ पर आरोहण कर), अथ (अब उत्तम जीवन यात्रा के अन्तिम भाग में), जिर्वि (पूर्ण अवस्था को प्राप्त हुआ तू), विदथम् आवदासि (सब ओर) से ज्ञान का प्रचार करने वाला है अपने ज्ञान व अनुभवों से औरों को लाभ पहुँचाने वाला है। अर्थात् हम ऊपर उठें, अवनत न हो। जीवन-शक्ति व बल प्राप्त करें। नीरोग, स्वस्थ इन्द्रियों वाले शरीर-रथ में जीवन यात्रा करते हुए जीवन के अन्तिम भाग में ज्ञान का प्रसार करें।

महर्षि यास्क ने मनुष्य का लक्षण लिखते हुए अपने निरुक्तशास्त्र में कहा है-

मत्त्वा कर्माणि सीव्यति, मनुष्यमानेन सृष्टाः।
मनस्यतिः पुनर्मनस्वीभावे। मनोरपत्यं वा।।

(३.३७)

जो विचार कर कर्म करे, उसे मनुष्य कहा जाता है। कर्म करने से पूर्व जो अच्छे प्रकार से विचार करे कि मेरे इस कर्म का फल क्या होगा? किस-किस पर इस कर्म का प्रभाव पड़ेगा? मेरे इस कर्म से किस का भला और किस का बुरा होगा? साथ ही यह भी सोचना चाहिए कि बुरे कर्म का बुरा फल होगा और अच्छे कर्म का फल अच्छा होगा। अच्छे और बुरे कर्म ही जीवन में सुख-दु:ख का कारण होते हैं, जो जीव को अवश्यमेव भोगने पड़ते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मनुष्य के लक्षण इस प्रकार बताए हैं-

''मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दु:ख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्वसामर्थ्यों से धर्मात्माओं की, चाहे वे महाअनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति तथा प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हों तथापि उनका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें। अर्थात् जहाँ तक हो सके, अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे कितना ही दारुण दु:ख प्राप्त हो। चाहे प्राण भले ही चले जाएँ, परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।''

महर्षि दयानन्द जी ने कितनी सुन्दर, सुव्यवस्थित, मर्यादापालक, सख्त एवं अनुशासित व्याख्या की है! महर्षि दयानन्द जी का जीवन इस 'मनुष्यपन' की व्याख्या के अनुसार था। वे महान् मनीषी महर्षि थे, उन्होंने मनुष्यपन धर्म के अनुसार ही जीवन में आये संकटों का भी सामना किया था। महर्षि जी अपनें जीवन में किस प्रकार अकेले ही अंग्रेज साम्राज्य के विरुद्ध लिखते रहे व बोलते रहे। १९५७ की क्रान्ति के विफल हो जाने के पश्चात् महारानी विक्टोरिया ने भारतीयों के नाम अपना आदेश जारी करते हुए लिखा था- **''यद्यपि ईसाइयत में हमारा पूर्ण विश्वास** है, फिर भी हम अपनी प्रजा पर अपने विश्वासों को थोपना नहीं चाहते। हम किसी भी भारतीय के धार्मिक विश्वासों और पूजा-पद्धति में भी हस्तक्षेप नहीं करेंगे और न किसी के द्वारा किया जायेगा। जो भी ऐसा करेगा, वह हमारे कोप का भाजन होगा।''

महारानी विक्टोरिया की यह घोषणा भारतीयों को बहकाने के लिए पर्याप्त थी, किन्तु महर्षि दयानन्द जी की दूरदर्शिता ने इसके परिणामों को भाँप लिया था। उन्होंने तुरन्त ही इस घोषणा का प्रतिवाद करते हुए सत्यार्थप्रकाश

www.thearyasamaj.org

में लिखा-

"कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत-मतान्तर के आग्रह-रहित, अपने और पराये का पक्षपात-शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य सुखदायक नहीं है।"

इस प्रकार महर्षि जी ने सारा जीवन इस मनुष्यपने के धर्म का पालन करते हुए ही देशधर्म की बलिवेदी पर स्वयं को न्यौछावर कर दिया था। 'मनुर्भव' की महर्षि दयानन्दकृत व्याख्या ही सर्वोत्तम धर्म की मानवीय व्याख्या है। महर्षि जी द्वारा प्रतिपादित 'मनुर्भव' की व्याख्या से प्रेरणा पाकर हजारों भारतीय राष्ट्रवादी युवक स्वतन्त्रता के लिए फाँसी पर चढ़ गये।

वेद की सबसे बड़ी विशेषता यही है और मनुष्य को इसका सर्वप्रथम उपदेश यह है कि वह विचारपूर्वक अपने और संसार के कल्याण के मार्ग पर चले। वह हिन्दू, मुसलमान और ईसाई न बने, मनुष्य बने। आप कहेंगे कि वेद तो आर्य बनने की बात कहता है। ठीक है, किन्तु आर्य का अभिप्राय भी तो श्रेष्ठ मनुष्य है। "**आर्यः ईश्वरपुत्रः**" आर्य ईश्वर पुत्र को कहते हैं। वह पिता का अनुव्रती होकर प्राणिमात्र के हित का ध्यान रखता है।

वेद कहता है-"अहं भूमिमददाम् आर्याय (ऋग्वेद ४/२६/२) मैं यह पृथिवी आर्यों को देता हूँ। वस्तुतः सुख और शान्ति के लिए इस भूमि पर आर्यों का अर्थात् ऐसे लोगों का आधिपत्य होना चाहिए जो जीव के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझकर व्यवहार करें।"

आर्यों की इस उदार आदर्शवादिता को ध्यान में रखकर ही वेद ने कहा- "**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**"-संसार को आर्य बनाओ। प्रश्न है कि आर्य बनाने का उपाय क्या है- **इन्द्रं वर्धन्तो असुरः अपघ्नन्तो अराव्णः** अर्थात् श्रेष्ठ गुणों से युक्त विशिष्ट व्यक्तियों का संरक्षण करो, इनको बढ़ाओ और कृपण, अनुदार, ईर्ष्यालु और स्वार्थियों का सर्वदा उच्छेद करो। दूसरे शब्दों में जो इन्द्र हैं, वे आर्य हैं और जो अदानी आदि दुर्गुण युक्त हैं, वे दस्यु हैं, अनार्य हैं। संसार में शान्ति के साम्राज्य के लिए आर्यों की वृद्धि होनी चाहिए और दस्युओं का विनाश होना चाहिए।

मनुष्य कब बनता है, इसके लिए हमें ऋग्वेद के मण्डल १ सूक्त ७० मन्त्र १ की शरण में जाना होगा-

वनेम पूर्वीरर्यो मनीषा अग्निः सुशोको विश्वान्यश्याः।
आ दैव्यानि व्रता चिकित्वाना मानुषस्य जनस्य जन्म॥

जिस प्रकार, दैव्यानि (देवत्व प्राप्त कराने वाले), व्रतानि (सम्पूर्ण सत्य व्यवहार आदि श्रेष्ठ व्रतों को), अचिकित्वान् (भली भाँति जानने वाला), अग्नि (सर्वज्ञ), सुशोकः (उत्तम प्रकाशमय), अर्यः (जगदीश्वर), विश्वानि अश्याः (सबको प्राप्त है), उसी प्रकार हम भी (मनीषा, पूर्वीः) (मननशक्ति से बुद्धियों का) आ वनेम (उत्तमता से आदरपूर्वक सेवन करें) यही मनुष्यस्य, जनस्य, जन्म (मनुष्य जाति के प्राणी का उत्पन्न होना है)।

मन्त्र में दो बातें मुख्य रूप से कही गई हैं कि संसार के व्यवस्थापक प्रभु के दिव्य गुणों को मनुष्य समझें। दूसरी यह कि उन गुणों को समझकर अपने जीवन में धारण करें, तभी इस शरीर में मनुष्यता का जन्म होता है, केवल मानव आकृति धारण करने से नहीं।

इस विचित्र संसार के उत्पादक, धारक, संहारक प्रभु के असीम बुद्धि कौशल, नियम-निष्ठा तथा परम ज्ञानैश्वर्य को मनुष्य ज्यों-ज्यों समझता है, त्यों-त्यों उसके ज्ञान की भूख उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। यदि वह इन दिव्य गुणों के आंशिक भाग को भी अपने आचरण में ले आता है, तो भी उसमें दिव्यता आ जाती है और उसका पशुता से पिण्ड छूटता जाता है। ज्ञान का लाभ तभी है, जब वह अपने आचरण का अंग बन जावे। जो ज्ञान कर्म के साथ नहीं जुड़ता, वह निरर्थक है, वाहक के ऊपर लदे बोझ के समान है।

आज संसार को सुख और शान्ति का धाम बनाने का प्रयत्न तो हो रहा है, किन्तु मानवता की प्रगति के लिए जिस संयम और वशित्व की आवश्यकता है, उस ओर लोगों को ध्यान ही नहीं है, इसलिए संसार को सुख और शान्ति का धाम बनाने के लिए सर्वप्रथम मनुष्य को मनुष्य बनाना आवश्यक है।

एक बार किसी पत्रिका में एक शिक्षाप्रद चुटकुला पढ़ा था। एक बाबू अपने कार्यालय से बचे हुए काम को पूरा करने के लिए कुछ फाइलें रविवार को अपने घर ले आता था। एक दिन घर में अवकाश पाकर जब वह फाइल लेकर बैठा तो चौथी-पाँचवी कक्षा में पढ़ने वाला उसका पुत्र कमरे में आकर शरारतें करने लगा। बाबू ने एक-दो बार टोका, किन्तु बच्चे भला कहाँ मानते हैं? इतने में बाबू

www.thearyasamaj.org

को एक बात सूझी। कमरे की दीवार पर संसार का एक मानचित्र टँगा हुआ था, उसने उसको फाड़कर टुकड़े कर दिये और बच्चे के सामने फेंकते हुए कहा- ''तेरी योग्यता हम तब जानेंगे, जब इन टुकड़ों को ठीक स्थान पर जोड़कर इसे पूरा बना देगा।'' बच्चा इन टुकड़ों को जोड़ने में लग गया। घण्टों हो गये, टुकड़े जुड़ने में नहीं आ रहे थे। कभी नीचे का टुकड़ा ऊपर और कभी ऊपर का नीचे चला जाता था। कई बार यही उलझनें दाएँ और बाएँ टुकड़ों में भी थीं। बाबू प्रसन्न था कि उसे निर्बाध काम करने का समय मिल गया। इतने में वायु के झोकों से नक्शे का एक टुकड़ा उड़कर उलट गया। बच्चे ने देखा कि उस टुकड़े के पृष्ठ भाग में मनुष्य के हाथ का पंजा बना हुआ था। उसने यह देखकर सारे टुकड़े पलट डाले तो उन सभी पर मनुष्य के चित्र का कोई-न-कोई भाग था। बच्चे ने संसार के नक्शे को जोड़ने की चिन्ता छोड़कर मनुष्य का चित्र जोड़ना प्रारम्भ किया तो पाँच मिनट में चित्र के सब अंग यथा स्थान जोड़ दिये और मनुष्य के बनने के साथ विश्व का पूरा नक्शा भी बन चुका था। विश्व को बनाने का रहस्य भी इसी में है। संसार को सुखद बनाने के लिए प्रथम मनुष्य का निर्माण आवश्यक है।

मनुष्य जीवन के निर्माण एवं उन्नति में वैदिक सोलह संस्कारों का विशेष स्थान है, विशेष महत्त्व है। मनुष्य की शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त भिन्न-भिन्न अवसरों पर संस्कारों की व्यवस्था प्राचीन ऋषि-मुनियों ने समाज सुधार के लिए सुन्दर ढंग से की है। 'संस्कारों' के अनुष्ठान से मनुष्य को सुसंस्कारों की प्राप्ति हो जाती है। महर्षि मनु ने इस विषय में सत्य लिखा है-

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च।।

(मनुस्मृति २-२६)

डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी (मनुस्मृति विशेषज्ञ) ने इस श्लोक का अर्थ और अनुशीलन इस प्रकार किया है-

सब मनुष्यों को उचित है कि वैदिकैः, पुण्यैः, कर्मभिः (वेदोक्त, पुण्यरूप कर्मों से), द्विजन्मनाम् (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अपने सन्तानों का) निषेकादिः शरीरसंस्कारः कार्यः (निषेकादि=गर्भाधान आदि संस्कार करें जो), इह च प्रेत्य पावनः (इस जन्म वा परजन्म में पवित्र करने वाला है)।

संस्कारों के उद्देश्य और लाभ पर प्रकाश डालते हुए संस्कार विधि की भूमिका में महर्षि दयानन्द लिखते हैं-''जिस करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकता है और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं। अतः संस्कारों का करना मनुष्यों को उचित है। अर्थात् इस लोक और परलोक में पवित्र करने वाले संस्कार हैं।''

महर्षि दयानन्द जी ने संस्कारों को परमोपयोगी समझकर ही प्राचीन ऋषि-मुनियों की पद्धति का अनुसरण करके संस्कार-विधि की रचना की थी। माता-पिता के शुद्ध आहार एवं शुद्ध विचारों का बालक पर बहुत प्रभाव होता है। संस्कारों में प्रथम तीन संस्कार गर्भाधान, पुंसवन तथा सीमन्तोनयन संस्कार तो बच्चे के जन्म से पूर्व ही किये जाते हैं, जिनका पूर्ण उत्तरदायित्व माता-पिता पर ही होता है। यदि बच्चे के पूर्व जन्म के संस्कार उत्तम हों, गर्भावस्था में माता-पिता के उत्तम संस्कार पड़े हों और जन्म के बाद भी उत्तम वातावरण प्राप्त हो जाये, तो ऐसे बच्चे महाभाग्यशाली होते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने इनके विषय में लिखा है-

''वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् है, जिनके माता-पिता विद्वान् और धार्मिक हों'' (सत्यार्थप्रकाश द्वितीय समुल्लास) ऐसे उत्तम एवं श्रेष्ठ दिव्य सन्तान को ही जन्म देने का वेद आदेश देते हैं- **''जनया दैव्यं जनम्''**।

चरक ऋषि ने संस्कार का लक्षण लिखते हुए कहा है-**''संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते''** अर्थात् पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनकी जगह सद्गुणों का आधान-धारण कराने को 'संस्कार' कहते हैं।

संस्कारों द्वारा मनुष्य निर्माण की योजना ही सर्वोत्तम योजना है, जिसके द्वारा श्रेष्ठ एवं दिव्य सन्तान की प्राप्ति होती है, इसलिए वेद ने संस्कारों को महत्ता एवं दिव्य जन की उत्पत्ति का आदेश दिया है। वेद के अनुसार ही तो वैदिक संस्कृति ने मानव-निर्माण की योजना को तैयार किया था। इस योजना को सफल बनाने के लिए ही संस्कारों की पद्धति को प्रचलित किया था। संस्कारों से ही **''मनुर्भव जनया दैव्य जनम्''** का सुन्दर आयोजन जीवन में सफल हो सकता है। वैदिक संस्कृति की विचारधारा सब संस्कारों द्वारा जीवात्मा को पवित्र बनाने का कार्यक्रम है, जीवन निर्माण की पद्धति है, प्रक्रिया है, मानव-मर्यादा है।

www.thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ - प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल*** - आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा*** - अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला*** - गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम*** - वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय*** - इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला*** - योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

www.thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ अक्टूबर २०१६ तक)

१. श्री कौशल किशोर पाण्डे, नई दिल्ली २. श्री प्रमोद आर्य, हिसार, हरि. ३. श्री सुभाषचन्द कथुरिया, हिसार, हरि. ४. श्री सतीश कुमार व श्रीमती अन्जु, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. ५. श्री पंकज कुमार गर्ग, कोलकाता, पं. बंगाल ६. श्री देवमुनि, अजमेर ७. आचार्य आशीष, देहरादून ८. चहक गुप्ता, हैदराबाद ९. स्वस्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. १०. निखिलेष सोमानी, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में गौवों के द्वारा उत्पादित दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ अक्टूबर २०१६ तक)

१. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर २. श्री रामरतन शर्मा, हमीरपुर, हि.प्र. ३. श्रीमती विजयलक्ष्मी नम्बियार, महा. ४. श्री मयंक कुमार, अजमेर ५. श्री कृष्ण सिंह राठी, झज्जर, हरि. ६. श्रीमती कमलेश आर्या, धौलपुर, राज. ७. श्री बलवान सिंह वैश्य, झज्जर, हरि. ८. कै. चन्द्रप्रकाश त्यागी व श्रीमती कमलेश त्यागी, हरिद्वार, उ.ख. ९. श्री धर्मपाल आर्य, पंचकुला, हरि. १०. श्री कृष्ण कुमार आर्य, हनुमानगढ, राज. ११. श्री अनुज मिश्रा, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

www.thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान - १२१

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- १. परोपकारी के अंक जनवरी (द्वितीय) २०१६ के पृष्ठ ३० पर ''अध्यात्मवाद'' आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, इन दोनों का आपस में सम्बन्ध क्या है- इस विषय का नाम अध्यात्मवाद है।

मैंने किसी जगह पढ़ा था कि अध्यात्म वह स्थिति है, जब बुद्धि आत्मा में स्थित हो जाता है और उस समय जो विचार आता है वह उत्तम ही आता है। कृपया स्पष्ट करें।

२. इसी अंक पृष्ठ ३३ पर जिज्ञासा-समाधान-१०३ पर **मुक्ति**-महर्षि ने कर्म, उपासना, ज्ञान को मुक्ति का मार्ग बताया, जबकि कपिलमुनि ने ज्ञान से मुक्ति मानी है तथा गीता में कर्म और ज्ञान को मुक्ति का मार्ग बताया है। कृपया स्पष्ट करें कि ज्ञान मुक्ति का मार्ग है या कर्म-ज्ञान दोनों।

३. इसलिए जो भी संसार में है, उसका नाम व काम परमेश्वर द्वारा नियम किया हुआ है।

कहा जाता है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है, इसका हनन उपरोक्त कथन में होता है।

अमरसिंह आर्य, सी-१२, महेश नगर, जयपुर-१५

समाधान-(क) आत्मा-परमात्मा को अधिकृत करके उस विषय में विचार करना, उसको आत्मसात करना अध्यात्म है। इस विचार को मानना अध्यात्मवाद है। व्यक्ति जब अपने आत्मा को जानना चाहता है, आत्मा क्या है, इसका स्वरूप क्या है, नाश को प्राप्त होता है या नित्य है, मरने के बाद आत्मा कहाँ जाता है, आत्मा बन्धन में क्यों बंध जाता है, इसका बंधन कैसे छूटेगा आदि-आदि आत्मा विषय में विचारना अध्यात्म ही है। ऐसे ही परमात्मा क्या है, स्वरूप क्या है परमात्मा का? परमात्मा करता क्या है, उसको कैसे प्राप्त किया जा सकता है, उसके प्राप्त होने पर क्या अनुभूति होती है आदि विचारना अध्यात्म है। गीता में भी कुछ ऐसा ही कहा है-

अक्षरं परमं ब्रह्म स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते। गी. ८.३

अपने मन में छिपे संस्कारों को देखना, अविद्यायुक्त संस्कारों को देखकर दूर करने का प्रयत्न करना, उनसे दु:ख और हानि को देखना, अपने मन को उपासना, तप आदि के द्वारा निर्मल बनाना, बनाने का प्रयत्न करना अध्यात्म है। बुद्धि और आत्मा को पृथक् देखना, संसार के विषयों से विरक्त हो अन्तर्मुखी होना यह सब अध्यात्म है। विरक्त हो आत्मा का दर्शन करना, प्रज्ञा बुद्धि को प्राप्त करना, प्राप्त गुणातीत हो ईश्वर-दर्शन करना अध्यात्म है, अध्यात्म की पराकाष्ठा है।

आपने जो पढ़ा वह स्थिति आध्यात्मिक व्यक्ति की होती है, हो सकती है। जब व्यक्ति अध्यात्मवाद को अपनाकर चलता है तो उसके अन्दर से श्रेष्ठ विचार उत्पन्न होने लगते हैं। इन्हीं उत्तम विचारों से व्यक्ति अपने जीवन को कल्याण की ओर ले जाता है। श्रेय मार्ग की ओर ले जाता है।

(ख) मुक्ति दु:खों से छूटने का नाम है। दु:ख से पूर्णत: छूटना यथार्थ ज्ञान से ही हो सकता है। कर्म, उपासना से दु:ख को दबाया जा सकता है, कम किया जा सकता है, किन्तु सर्वथा नहीं हटाया जा सकता, दु:ख को सर्वथा तो ज्ञान से ही हटाया जा सकता है। जिस दिन ज्ञान से दु:ख को पूर्णरूप से दूर कर दिया जायेगा, उस दिन मुक्ति की भी अनुभूति होगी।

योगदर्शन के अन्दर दु:ख का हेतु अविद्या कहा है- '**तस्यहेतुरविद्या**'।

दु:ख का कारण अन्य कुछ नहीं कहा। जब दु:ख का कारण अविद्या है तो अर्थापत्ति से दु:ख के हटने का नियत कारण विद्या ही होगा। इसी बात को महर्षि कपिल ने सांख्यदर्शन में कहा है '**ज्ञानान्मुक्ति:**' ज्ञान से मुक्ति होती है, इसी बात को अन्य शास्त्र भी पुष्ट करते हैं।

ज्ञान से ही मुक्ति होती है यह बात भक्ति-मार्गी तथा कर्ममार्गियों को नहीं पचती। उनको लगता है कि यह बात तो विपरीत है। कुछ लोग उपासना को ही प्रधान बनाकर चलते हैं। उनको उपासना ही मुक्ति का मार्ग दिखता है, किन्तु वे यह नहीं जानते कि बिना ज्ञान के परिष्कृत हुए उपासना भी ठीक-ठीक नहीं होने वाली, उपासना का स्तर

www.thearyasamaj.org ...क के सिद्धान्त परिष्कृत नहीं होंगे, तब तक वह कैसे ठीक-ठीक उपासना कर सकता है। हाँ, अपने आधे-अधूरे ज्ञान के बल पर उपासना करता है और उसी में सन्तुष्ट रहने लगता है तो वह कैसे आगे प्रगति कर सकता है। यदि व्यक्ति ठीक-ठीक उपासना करता है तो उसको ज्ञान के महत्त्व का भी पता लगेगा और वह ज्ञान प्राप्ति के लिए अधिक प्रयत्नशील रहेगा।

ज्ञान का तात्पर्य यहाँ केवल शाब्दिक ज्ञान से नहीं है। अपितु यथार्थ ज्ञान, तात्विक ज्ञान से है। जब यथार्थ ज्ञान होता है, तब हमारे अन्दर के क्लेश परेश्वर के सहयोग से क्षीण होने लगते हैं। क्षीण होते-होते सर्वथा नष्ट हो जाते हैं, दग्धबीजभाव को प्राप्त हो जाते हैं, ऐसी अवस्था में मुक्ति होती है।

जैसे भक्तिमार्गी ज्ञान की आवश्यकता नहीं समझते, ऐसे ही कर्ममार्गी भी ज्ञान को आवश्यक नहीं मानते। उनका कथन होता है कि कर्म करते रहो, मुक्ति अपने आप हो जायेगी। उनका यह कहना अधूरी जानकारी का द्योतक है। यथार्थ ज्ञान के बिना शुद्ध-कर्म कैसे होगा? इसलिए ऋषियों की मान्यता के अनुसार ज्ञान से ही मुक्ति होती है। इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं कि कर्म और उपासना को छोड़ देना चाहिए। शुद्ध कर्म-उपासना हमारे अन्त:करण को पवित्र करते हैं। पवित्र अन्त:करण ज्ञान को ग्रहण करने में अधिक समर्थ होता जाता है। जैसे-जैसे यथार्थ ज्ञान होता जायेगा, वैसे-वैसे साधक मुक्ति की ओर अग्रसर होता चला जायेगा।

गीता के हवाले से जो बात आपने कही है, तो गीता में भी यत्र-तत्र ज्ञान को ही महत्त्व दिया है। कुछ प्रमाण गीता से ही-

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।। - ४.३८
यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरूते तथा।। - ४.३७
तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत।। - ४.४२
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एक भक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।। - ७.२७

गीता के इन सभी श्लोकों में ज्ञान को श्रेष्ठ कहा है, ज्ञान की महिमा कही है। इसलिए शास्त्र के मत में तो ज्ञान से ही मुक्ति होती है। इसमें न तो कोई ज्ञान के साथ लगकर मुक्ति देने वाला है और न ही ज्ञान का कोई विकल्प है। अस्तु

(ग) जिज्ञासा-समाधान १०३ में जो समाधान 'क' के अन्त में लिखा ''इसलिए जो भी संसार में है, उसका नाम व काम परमेश्वर द्वारा नियम किया हुआ है।'' इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि मनुष्य के कर्म करने की स्वतन्त्रता का हनन हो रहा है। वहाँ मनु का प्रमाण देते हुए कहा था-

सवेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवाऽऽदौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे।।

-मनु. १.२१

परमेश्वर ने संसार के सब पदार्थों के नाम व काम निर्धारित कर रखे हैं। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, गो, अश्व, मनुष्यादि, इनके भिन्न-भिन्न कर्म, जैसे-सूर्य का गर्मी व प्रकाश देना, चन्द्रमा का शीतलता देना, गाय का दूध देना, अश्व का यान के रूप में आदि। गाय-अश्व आदि को हम विद्यालंकार, वेदालंकार करवाना चाहें तो वह होगा ही नहीं, क्योंकि यह काम इनका है ही नहीं। ऐसे ही मनुष्यों के कर्म विद्या अध्ययन करना, अगले नये शुभ अथवा अशुभ कर्म करना मनुष्य की स्वतन्त्रता है।

यह स्वतन्त्रता परमेश्वर की ओर से निर्धारित है। इस निर्धारण के आधार पर मनुष्य स्वतन्त्र होकर शुभ अथवा अशुभ कर्म कर सकता है। इस रूप में जिज्ञासा-समाधान १०३ के तात्पर्य को समझना चाहिए। अलमिति।

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दु:ख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

राजा और प्रजा जन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

www.thearyasamaj.org

संस्था - समाचार

१६ से ३१ अक्टूबर २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद-प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य-सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं तथा अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। अतिथि-यज्ञ के होता के रूप में दान देने वाले यजमान यदि ऋषि उद्यान में उपस्थित होते हैं तो उनके जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगाँठ, सम्बन्धियों की पुण्यतिथि एवं अन्य अवसरों से सम्बन्धित विशेष मन्त्रों से आहुतियाँ भी दिलवायी जाती हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और सोमवार से शुक्रवार तक 'उपदेश मंजरी' पुस्तक का पाठ एवं चर्चा होती है। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन होता है। प्रत्येक रविवार को प्रात:काल के प्रवचन में समसामयिक सामाजिक, राष्ट्रीय घटनाक्रमों पर व्याख्यान होता है। सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिनमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं। ऋषि उद्यान के प्रांगण में प्रतिदिन प्रात: और सायं आर्यवीर दल की शाखा योग्य शिक्षकों के द्वारा लगायी जाती है, जिसमें आसन, प्राणायाम, जूडो-कराटे, रस्सा, मलखम्भ, जिमनास्टिक आदि विद्याओं को सिखाया जाता है।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में ऋग्वेद के ४-२०-८ मन्त्र की व्याख्या करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि इस मन्त्र में श्रेष्ठ गुणों वाले राजा के कर्तव्यों का उपदेश है। राजा विशिष्ट व्यक्ति होने के कारण प्रसिद्ध होना स्वाभाविक है, किन्तु समाज के सभी वर्गों के लोगों में प्रशंसित तभी होता है जब वह सब मनुष्यों के सुख के लिये उत्तम कार्य करता है। जैसे आजकल के प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री आदि केवल अपने निर्वाचन क्षेत्र के जिले, संभाग में ही विशेष रूप से अपने मतदाताओं की उन्नति का प्रबन्ध करते हैं, अन्य क्षेत्रों में सामान्य विकास करते हैं और अपने विरोधियों के क्षेत्र की उपेक्षा करते हैं, यह ठीक नहीं है। राजा अपने राज्य के सब स्थानों में विद्या का विस्तार करके यशस्वी होता है अर्थात् विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि का निर्माण करके सबके लिये पठन-पाठन की सर्वोत्तम व्यवस्था करके यशस्वी होता है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से और धन आदि के उचित वितरण से उपद्रव नहीं होते अथवा कम होते हैं। पक्षपातरहित होकर प्रजा को कृषि, पशुपालन, व्यापार, व्यवसाय, उद्योग, सेवा आदि में सुरक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सहयोग करते हुए उत्तम धन देकर यशस्वी होता है। यह राजा का ही कर्तव्य है कि प्रजा में कोई मनुष्य बेरोजगार और भूखा-प्यासा न रहे। बेघर लोगों के लिए उनकी आवश्यकता और योग्यता के अनुकूल आवास का उचित प्रबन्ध करके यशस्वी होता है।

विशिष्ट व्यक्ति- मंगलवार २५ अक्टूबर को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् एवं कवि **डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री** जी ऋषि उद्यान आये। वे आचार्य धर्मवीर जी के घनिष्ट मित्र हैं। प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में शास्त्री जी ने कहा कि संसार के लोग भ्रमित हैं और वे आर्यसमाज के भवनों में स्थूल मूर्ति न होने के कारण आर्यसमाजियों को नास्तिक मानते हैं। वे आँख से हर पदार्थ को देखना चाहते हैं, किन्तु ईश्वर निराकार होने के कारण किसी भी इन्द्रिय के द्वारा जाना नहीं जा सकता। संसार में बहुत सी ऐसी वस्तुएँ हैं, जिसको हम आँख से देखकर भी नहीं जान सकते। जैसे जीभ से चखे बिना नमकीन, मीठा, कड़वा, खट्टा आदि स्वाद का ज्ञान नहीं होता। इसी प्रकार नाक के बिना गंध का ज्ञान नहीं होता।

देश में पाखण्ड बढ़ रहा है। भगवान् की पूजा (मूर्तिपूजा) के नाम पर बाजारीकरण हो रहा है। नये-नये

www.thearyasamaj.org

भगवान् और उनकी नयी-नयी पूजा पद्धति, नये-नये ग्रन्थ, नये-नये अवतार, गुरु आदि बनाये जा रहे हैं। व्याख्यान के अंत में डॉ. धर्मवीर जी को अपनी श्रद्धाञ्जलि देते हुए स्वरचित संस्कृत श्लोक '**धर्मवीरस्य यश: शरीरम् अजरम्**' सुनाया।

दीपावली के दिन प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि आज दीपावली का पर्व पूरे देश में मनाया जा रहा है। ऋषियों द्वारा निर्धारित पर्व की विशुद्ध-पद्धति का लोप हो रहा है। साफ-सफाई, लिपाई-पुताई द्वारा घर आंगन की शुद्धि करके यह पर्व मनाया जाता था। बाहर की शुद्धि के साथ आंतरिक शुद्धि के लिये ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करते हुए विशेष यज्ञ किया जाता था। आज पूरे देश में अरबों रुपये के पटाखे जलाये जायेंगे। इससे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है, पर्यावरण प्रदूषित होता है, पशु-पक्षी अशांत हो जाते हैं, बहुत-से पक्षी मर जाते हैं। १३३ वर्ष पूर्व दीपावली के दिन ही वेदोद्धारक, महान् समाज सुधारक, स्वतन्त्रता समर्थक, परोपकारप्रिय महर्षि दयानन्द जी का भी निर्वाण हुआ था।

शनिवार सायंकालीन सत्संग में **ब्र. सत्यव्रत जी** ने कहा कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति में तीन प्रकार के बल सहायक हैं- **सात्विक बल**, राजसी बल और तामसी बल। हमारे जीवन के सर्वोत्तम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने में सात्विक बल की आवश्यकता होती है, किन्तु राजसी बल और तामसिक बल भी न्यून मात्रा में सहायक होता है। राजसी बल से हम क्रियाशील रहते हैं और तामसिक बल से निद्रा आदि के कारण स्वास्थ्य ठीक रहता है।

रविवारीय प्रात:कालीन सत्संग में **श्री शांति देव जी** ने आर्यसमाज के पुराने भजनोपदेशक श्री भगवतीप्रसाद अभय द्वारा रचित वैराग्यपूर्ण राजस्थानी लोकगीत 'थारी काया रो गुलाबी रंग उड़ जा सी' सुनाया। **पं. रामचन्द्र आर्य** जी ने महर्षि दयानन्द की जीवनी पर आधारित गीत 'भारत के एक संन्यासी की हम कथा सुनाते हैं..' सुनाया।

रविवारीय प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में आयुर्वेद की चर्चा करते हुए **ब्र. बरुण जी** ने कहा कि आयुर्वेद का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। चारों वेद स्वत: प्रमाण हैं। आयुर्वेद ऋग्वेद का उपवेद है। यदि वेद को जानना, समझना है तो उसके लिये आयुर्वेद का अध्ययन सहायक होता है। आयुर्वेद का प्रमाण स्थालीपुलाक न्याय से कर सकते हैं। आयुर्वेद से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति जुड़ा हुआ है। रोग की अवस्था में आयुर्वेदिक चिकित्सा से जिसको स्वास्थ्य प्राप्त होता है, वह आयुर्वेद पर पूर्ण विश्वास करता है। आयुर्वेद का उद्देश्य रोगी के विकार का शमन करना है। रेतीले, बर्फीले, पठारी इलाके में औषधियाँ उत्पन्न नहीं हो सकतीं, इसलिये उन क्षेत्रों में आयुर्वेद का प्रचार नहीं रहा। क्योंकि ऐसे क्षेत्रों में कुछ वनस्पतियाँ तो हो सकती हैं, लेकिन सभी प्रकार की औषधियाँ वहाँ उग नहीं सकतीं। **ब्र. प्रशांत जी** ने कहा कि सन् १९४७ में देश से अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी हमारे देश में कालोनी, सड़क, ग्राम, नगर, पुस्तकालय, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि स्थानों और संस्थाओं के नाम विदेशी आक्रान्ताओं, अत्याचारियों तथा दुराचारियों के नाम पर होना दु:खद स्थिति है। ये सब विदेशी नाम मानसिक दासता के प्रतीक हैं। इन सब विदेशी नामों को हटाकर उनके स्थान पर हमारे देश के ऋषि-महर्षि, महापुरुषों, समाज सुधारकों, देशभक्तों, क्रान्तिकारियों और बलिदानियों के नाम लिखे जायें। इसके लिये हम सबको प्रयास करना चाहिये।

शोक समाचार-२२ अक्टूबर प्रात:कालीन प्रवचन के बाद आचार्य सत्यजित् जी ने सूचना दी कि आज सुबह गुड़गांव निवासी आचार्य अर्जुनदेव वर्णी जी के देहावसान का समाचार मिला है। वे कुछ दिनों से बीमार थे। इसीलिये ७ अक्टूबर को स्व. डॉ. धर्मवीर जी के अन्त्येष्टि संस्कार व ९ अक्टूबर को श्रद्धांजलि सभा में वे आ न सके। उन्होंने मोबाइल पर अपना संदेश भेजा था। दिवंगत आत्मा की शांति के लिये दो मिनट का मौन रखा गया। तत्पश्चात् उनके अंतिम संस्कार में सम्मिलित होने के लिये आचार्य सत्यजित् जी गुड़गाँव के लिये प्रस्थान कर गये।

ज्योत्स्ना जी सभा सदस्य मनोनीत - ०९ अक्टूबर रविवार को डॉ. धर्मवीर जी की श्रद्धाञ्जलि सभा में परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि ने घोषणा की कि सभा के सदस्यों ने सर्वसम्मति से उन्हें सभा की सदस्य

www.thearyasamaj.org

बनाने का निर्णय किया है। ज्योत्स्ना जी को वेद-प्रचार और आर्यसमाज के संस्कार विरासत में प्राप्त हुए हैं। पत्रिका, पुस्तक प्रकाशन, वेद प्रचार, संस्था संचालन आदि का उन्हें पहले से ही ज्ञान व अनुभव है। परोपकारिणी सभा के इतिहास में पहली बार कोई महिला सभा की सदस्य चुनी गई। ज्योत्स्ना जी अनुभवी विदुषी होने के साथ-साथ विगत लगभग तीस वर्षों से सभा के कार्य-कलापों से जुड़ी हुई हैं। डॉ. धर्मवीर जी द्वारा आरम्भ किये गये सभी कार्यों को सफलता के शिखर तक पहुँचाने के लिये वे संकल्पबद्ध हैं। पूरा आर्यजगत् उनके साथ खड़ा है।

निर्माण-कार्य पूर्ण- ऋषि उद्यान के मुख्य द्वार के निकट भूमिगत पार्किंग और उसके ऊपर वाचनालय का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है।

वर्धापन संस्कार-२८ अक्टूबर शुक्रवार को परोपकारिणी सभा के माननीय कोषाध्यक्ष **श्री सुभाष नवाल जी** ने ऋषि उद्यान में अपना जन्म दिवस मनाया। उन्होंने इस अवसर पर ऋषि उद्यान में आकर यज्ञ किया और विद्वानों का आशीर्वाद लिया। ३० अक्टूबर रविवार को परोपकारिणी सभा के सहयोगी और कार्यकर्त्ता **श्री वासुदेव जी** का जन्म दिवस मनाया गया।

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थल पर कार्यक्रम:- ३० अक्टूबर दीपावली को सायंकाल महर्षि दयानन्द जी के देहत्याग स्थल **भिनाय कोठी**, आगरा गेट, अजमेर में शाम ४ से ७ बजे तक विशेष यज्ञ एवं व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आचार्य सत्यजित् जी, गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियों, ऋषि उद्यान के आश्रमवासियों, निर्वाण स्थल न्यास के पदाधिकारियों तथा नगरवासी महिला-पुरुषों ने भाग लिया।

ऋग्वेद पारायण-यज्ञ प्रारम्भ- महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के १३३ वें बलिदान समारोह पर आयोजित ऋषि मेले के अवसर पर ३१ अक्टूबर से ब्रह्मत्व में ऋग्वेद-पारायण यज्ञ आरम्भ हो चुका है। महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारियों द्वारा प्रात: सायं ऋग्वेद के मन्त्रों का पाठ करके आहुतियाँ दिलवायी जा रही हैं।

दर्शनार्थी- पूरे वर्ष ऋषि-भक्त, गुरुकुलों के आचार्य, आचार्या, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, संन्यासी तथा गृहस्थ स्त्री-पुरुष अजमेर आते रहते हैं। इसी क्रम में २४ अक्टूबर शाम को **श्रीगंगानगर** से बस द्वारा महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रायें ऋषि उद्यान में संचालित गतिविधियों के दर्शनार्थ अजमेर आयीं।

योग-शिविर सम्पन्न-१९ अक्टूबर को शिविर समापन के अवसर पर परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी ने शिविर संचालन में सक्रिय योगदान देने वाले गुरुकुल के आचार्यों और व्यवस्था में लगे हुए ब्रह्मचारियों, अन्य कार्यकताओं की सराहना करते हुए सभी को धन्यवाद दिया। शिविर में आये हुए साधक-साधिकाओं को सभा की गतिविधियों की जानकारी देते हुए उनसे आगे भी शिविरों में आने और सभा को यथायोग्य सहयोग करने के लिये आमन्त्रित किया। आगे उन्होंने कहा कि शिविरार्थीगण अपने-अपने क्षेत्र में योग, वैदिक-धर्म और संस्कृति का प्रचार करें। आवश्यकता होने पर खण्डन-मण्डन भी करें। स्वाध्याय और शास्त्रार्थ नहीं होने के कारण आर्यसमाज का प्रचार कार्यक्रम कमजोर हो गया है। जहाँ कहीं भी योग और वेद-प्रचार कार्यक्रम हो रहा हो, वहाँ अवश्य जायें। कार्यक्रम के अन्त में अनेक शिविरार्थियों ने अपने-अपने अनुभव सुनाये। सभी शिविरार्थियों ने कहा कि शिविर में आने से उनके अनेक शारीरिक, मानसिक कष्ट दूर हुए हैं। यहाँ सभी प्रकार की सुविधायें है। इस शिविर के अनुशासन और अन्य अनुभव स्मरणीय हैं। मौन से आत्मनियन्त्रण का अभ्यास हुआ। आत्मा, परमात्मा और प्रकृति के यथार्थ स्वरूप को जानने का सुअवसर मिला। योग दर्शन के व्याख्यान और शंका-समाधान से योगसाधना के विषय में अत्यन्त सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त हुआ। यहाँ योग अभ्यास के साथ-साथ प्रतिदिन निश्चित समय पर दैनिक-यज्ञ, वेदपाठ, वेद स्वाध्याय, वेद-प्रवचन सुनने का अतिरिक्त लाभ हुआ। सेवा करने और संगठित रहने का प्रशिक्षण मिला। शुल्क कम होने से अधिक से अधिक लोग शिविर का लाभ उठा सके हैं। अन्त में आचार्य सत्यजित् जी ने आगामी शिविर की सूचना देते हुए कहा कि शिविरार्थियों द्वारा दिये गये व्यवस्था सम्बन्धी सुझावों पर विचार किया जायेगा। **प्रो. धर्मवीर जी** ने इन शिविरों को आरम्भ करवाया था।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

www.thearyasamaj.org

सम्पन्न कार्यक्रमः-

(क) ०६-१३ नवम्बरः ध्यान शिविर, रोजड़।

(ख) १४ नवम्बर : आर्यसमाज बहरोड़, अलवर में प्रवचन।

आगामी कार्यक्रमः-

(क) १५-१७ नवम्बर : अलीपुर-नारनौल में ऋग्वेदपारायण यज्ञ+प्रवचन।

(ख) १८-२० नवम्बर : आर्यसमाज नजफगढ़, दिल्ली के वार्षिकोत्सव में।

(ग) २३-२७ नवम्बर : वेद पारायण-यज्ञ, जमानी आश्रम।

(घ) २८ नवम्बर से ०४ दिसम्बर २०१६ : आर्यसमाज सेक्टर-९ पंचकूला आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव।

*** आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः-

(क) ११, १२, १३ नवम्बर : आर्यसमाज आर. के. पुरम्, नई दिल्ली।

आगामी कार्यक्रमः-

(क) १७-२० नवम्बर : यजुर्वेद पारायण-यज्ञ, ग्राम-आमकी दीपचंदपुर, सहारनपुर।

(ख) २३-२७ नवम्बर : यजुर्वेद पारायण-यज्ञ, महर्षि दयानन्द आश्रम, जमानी, इटारसी।

आर्य जगत् के समाचार

१. महर्षि का निर्वाण-दिवस- ३० अक्टूबर २०१६ को मनाया, उप-प्रतिनिधि सभा गोण्डा बलरामपुर के तत्वाधान में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी महाशय छोटे लाल के प्रागंण में स्वतन्त्रता संग्राम की भावना जागृत करने वाले एवं आर्यसमाज के संस्थापक युगपुरुष देव दयानन्द सरस्वती का पावन निर्माण दिवस मनाया।

२. वार्षिक महोत्सव- दक्षिण पूर्व भारत में वैदिक धर्म के रक्षक, भारतीय संस्कृति के प्रहरी, आर्यों के तीर्थस्थल, गुरुकुल आश्रम आमसेना का ५० वाँ वार्षिक महोत्सव ११, १२ फरवरी २०१७ को अत्यन्त हर्षोल्लासमय वातावरण के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के महात्मा, विद्वान् एवं भजनोपदेशक अपना आशीर्वाद देने पधार रहे हैं। इसी शुभ अवसर पर स्व. श्री चौधरी शीशराम जी आर्य की पुण्यस्मृति में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ ६ फरवरी से प्रारम्भ होगा। इसकी पूर्णाहुति १२ फरवरी को ११ बजे होगी। इस अवसर पर श्री चौधरी मित्रसेन जी आर्य की पुण्यस्मृति में आर्यजगत् के तीन उच्चकोटि के विद्वानों का अभिनन्दन किया जाएगा। साथ में गुरुकुल सम्मेलन, व्यायाम प्रदर्शन आदि महत्वपूर्ण कार्यक्रम भी सम्पन्न होंगे।

३. वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न- आर्य समाज चेंबूर, मुंबई का वेद प्रचार सप्ताह २१ से २६ अगस्त २०१६ तक बड़ी श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री हरिप्रसाद आर्य रहे। संचालन पं. ईश्वर मित्र शास्त्री ने किया। पं. नरेन्द्र वेदालंकारजी ने वेदमन्त्रों का सस्वर पाठ किया। भजनीक श्री शिवपाल आर्य ने मधुर भजन प्रस्तुत किये। २४ अगस्त को महिला सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें सैंकड़ों महिलाओं ने भाग लिया। २६ अगस्त को यज्ञ की पूर्णाहूति अर्पित की। तत्पश्चात् सभी विद्वानों एवं वेदपाठी गण भजनीक मंडली का आभार व्यक्त करते हुए, उन्हें श्री वेदप्रकाश गर्ग जी ने सम्मानित किया।

४. वीर पर्व का आयोजन- सार्वदेशिक आर्य वीर दल, मण्डल फरीदाबाद के तत्त्वाधान में विजयादशमी के दिन ११ अक्टूबर २०१६ को राजकीय माध्यमिक पाठशाला ग्राम सुनपेड़ (बल्लबगढ) के प्रांगण में वीर पर्व हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। ध्वजारोहण के पश्चात् श्री रामवीर प्रभाकर जी ने भजन प्रस्तुत किए। आर्यवीर दल के अधिकारी श्री देशबन्धु आर्य कुलभूषण आर्य, होतीलाल आर्य, महाशय हीरालाल जी आदि उपस्थित रहे। आर्यवीर सचिन, सागर, भूपेन्द्र, लोकेश, शिवम्, पवन, अजय, विष्णु, दीपक आदि ने व्यवस्था संभाली।

५. श्रद्धांजलि- आर्यसमाज कलकत्ता १९, विधान सरणी में दिनांक ०९-१०-२०१६ को आर्यसमाज कलकत्ता, आर्यसमाज बडाबाजार, आर्य समाज हावडा प्रभृति कोलकाता की समस्त आर्यसमाजों द्वारा श्री चाँदरतन दम्माणी जी की अध्यक्षता में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित समस्त आर्यजनों ने इस अपूर्णीय क्षति पर हार्दिक शोक प्रकट किया एवं परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं उत्तम

गति के लिए प्रार्थना करते हुए अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए।

६. दवा वितरण- लातूर: प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी आर्यसमाज मन्दिर गाँधी चौक, लातूर की ओर से शरद् पूर्णिमा के रात में लेने की दमा औषधि का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है। बाहर गांव के रोगियो के लिए पोस्ट के जरिये दवा भेजने की व्यवस्था की गयी है। जरुरतमन्द रोगी अपना पता लिखकर व डाक टिकट लगाकर पोस्ट भेजने की व्यवस्था करें। यह पोस्ट मन्त्री, आर्यसमाज मन्दिर, गाँधी चौक, लातूर (महाराष्ट्र) पिन-४१३५१२ इस पते पर भेजने पर डाक का लाभ उठाएं। ऐसा आवाहन चंद्रभानू आसाराम परेडेकर, मन्त्री, आर्य समाज मन्दिर, लातूर करते हैं।

७. वेद प्रचार सम्पन्न- आर्यसमाज राजाजीपुरम् लखनऊ का वेद प्रचार कार्यक्रम १९ से २२ सितम्बर २०१६ तक विभिन्न परिवारों में आयोजित किया गया, जिसमें देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, भजन व वेदोपदेश हुए। वेदोपदेश आचार्य पं. सन्तोष वेदालंकार, आचार्य विश्वव्रत शास्त्री व पं. अखिलेश कुमार लखनवी द्वारा किये गये। देवयज्ञ के पश्चात् बिजनौर से पधारे भजनोपदेशक पं. कुलदीप विद्यार्थी के भजनोपदेश तथा आचार्य डॉ. शिवदत्त पाण्डेय के प्रवचन हुए।

८. आर्य वीरों का प्रदर्शन- आर्यवीर दल गंगापुर सिटी, राज. द्वारा विजय दशमी के पावन अवसर पर आर्यवीरों द्वारा अस्त्र-शस्त्रों का संचालन कर शौर्य का प्रदर्शन किया गया, जिसमें आर्य वीरों द्वारा सर्वांग सुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार, आसन, पिरामिड, मल्लखम्भ एवं आत्मरक्षा के लिए जुडो-कराटे, तलवारबाजी, लाठी, काते आदि हैरत अंगेज विधाओं का बहुत ही सुन्दर तरीके से प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर्य वीर दल के प्रान्तीय संचालक श्री सत्यवीर आर्य द्वारा आर्य वीरों को देश हित में आपना तन-मन-धन से सहयोग करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में आर्यसमाज की महान् विभूति आचार्य धर्मवीर जी के देहांत पर दो मिनट का मौन रखकर श्रंदाजलि अर्पित की गई।

९. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज भीमगंजमण्डी, कोटा, राजस्थान का वार्षिकोत्सव १२ से १४ नवम्बर २०१६ तक आयोजित किया गया। आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ वैदिक प्रवक्ता, आगरा (उ.प्र.) और भजनोपदेशक पंडित प्रदीप शास्त्री फरीदाबाद हरियाणा के उपदेश हुए। कोटा निवासी पं. विरदीचन्द यज्ञ के ब्रह्मा थे। ईश्वर, वेद, यज्ञ, ऋषि दयानन्द के विषय में व्याख्यान हुए। प्रतिदिन यज्ञ-भजन-उपदेश होते रहे। अन्य विद्वानों के भी व्याख्यान हुए।

१०. सामवेद-पारायण यज्ञ सम्पन्न- आर्यसमाज सैक्टर २२-ए चण्डीगढ़ में विगत् ०५.से ११ सितम्बर २०१६ तक सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन हुआ। यह महायज्ञ एक सप्ताह तक प्रात: सायं गुरुकुल पोंधा के ब्रह्मचारियों के सुमधुर वेदपाठ द्वारा बहुत उत्तम रीति से सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया गया। इस समारोह में आर्ष गुरुकुल की स्थापना की घोषणा की गई, जिसका सभी आर्य महानुभावों ने मुक्त-कण्ठ से समर्थन किया।

११. वार्षिकोत्सव का आयोजन- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) का १०५ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ९, १०, ११ दिसम्बर २०१६ को आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव में देश के ख्यातनाम विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे तथा अध्ययनरत ब्रह्मचारी छात्रों के पाणि तथा वाणी के मनोहर कार्यक्रम देखने को मिलेंगे। समस्त गुरुकुल प्रेमी सज्जनों से निवेदन है उक्त कार्यक्रम में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें व विद्वानों के प्रवचनों से लाभ लें।

१२. सम्मानित- आर्यसमाज चामधेड़ा (महेन्द्रगढ़) की ओर से वेद, व्याकरण, आर्ष साहित्य, महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थों, ऋषि जीवन तथा इतिहास आदि अनेक विषयों के मर्मज्ञ विद्वान्, यशस्वी गवेषक आचार्य विरजानन्द जी दैवकरणी को डा० धर्मवीर आर्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वैवाहिक

१३. वधू चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, आयु- २७ वर्ष, कद- ६ फुट, रंग- गौर वर्ण, वायु सेना में अधिकारी युवक हेतु पी.एचडी., बी.एड., उच्च शिक्षित, आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित युवती चाहिए। **सम्पर्क-** ०९७१६९३१६१६ ई-मेल kumar.rajesh6319@gmail.com

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

www.thearyasamaj.org

श्री सुरेन्द्र कुमार

श्री राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

आचार्य धर्मवीर कृतज्ञता सम्मेलन की झलकियाँ

श्री राजेन्द्र विद्यालंकार

श्री सुभाष नवाल

www.thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक | प्रेषण : १५ नवम्बर, २०१६ | आर.एन.आई. ३९५९/५९

आचार्य धर्मवीर कृतज्ञता सम्मेलन की झलकियाँ

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,

www.thearyasamaj.org

प्रश्न- वेद के पढ़ने में बहुत समय नष्ट होता है, परन्तु इसमें भक्ति की उपलब्धि नहीं होती।

स्वामी जी- जो कुछ भी पुरुषार्थ नहीं करते और भीख माँगकर पेट पालना चाहते हैं, उनके लिए वेद